RIGHT KNOWLEDGE.

OR

The Gate to Religion

BY

VADILAL MOTILAL SHAH

Joint Editor "Jaina Hitechhu"
Author of 'Hit-Shiksha', 'Madhumakshika'
'Life of Damayanti and the lessons it
teaches' &c &c

Mirror of Ancient Faith!
Undaunted Worth! Inviolable Truth!
Virgil.

First Edition—2500 Copies

June, 1905.

सम्यक्त्व

अथवा

धर्मनो दरवाजो.

प्रकाशक.

वाडीलाल मोतीलाल शाह

'जैनहितेच्छु' पत्रनो जॉइन्ट एडिटर तथा 'हितशिक्षा', 'मधुमक्षिका', 'सती दमयती अने तेनी वातमाथी लेवानी शिखामणो' वि नो कर्त्ता.

अमदावाद.

hat right, what true, what fit we justly call,
et this be all my care, for this is all—Pope

"जे खरु छे, जे सत्य छे, ज्हेने आपणे व्याजवी
ते योग्य कहीए, ट्हेनी ज मात्र हु तो दरकार राखिश,
ारण के म्हारे मन त्हेमा बधुए छे"—पोप

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च सतां धर्मः सनातनः ॥

सर्व भव्य प्राणीओना

ऐहिक तेमज पारमार्थिक हित सारु

छपायलु

आ लघु पुस्तक

श्री (दक्षिण) अहमदनगर निवासी

धर्मप्रिय, बारव्रतधारी, ज्ञानवैराग्यना शोखीन

शेठ चांदमलजी लखमीचंदजी वोरा

तरफथी

सदुपयोग माटे

भेट.

" क्रियाथी, विचारथी के वाणीथी कोइ पण प्राणीनुं बुरु करवु नहि, चिंतववु नहि के बोलवुं नहि, उपकार करवो अने दान देवु ए ज सज्जनोनो सनातन धर्म छे."

અનુક્રમણિકા.

પ્રકરણ	વિષય	પૃષ્ઠ
	ઉપોદ્‌ઘાત	૭
૧	પ્રવેશક	૧૦
૨	ગુરુ	૧૧
૩	સમ્યક્ત્વ (સમકિત) તેની વ્યાખ્યા અને ભેદ	૩૨
૪	પચીસ દ્રષ્ટિ (પચીસ બોલ)	૫૧
૫	સમ્યક્ત્વના ૬૭ બોલ	૮૭
૬	દેવ તથા ધર્મ	૧૩૭
૭	મિથ્યાત્વ તેની વ્યાખ્યા અને ભેદ	૧૬૨
૮	શ્રોતાના પ્રકાર	૨૦૬
૯	સમ્યક્ત્વની સ્થિરતા	૨૧૮
	જાહેર ખબરો	૨૨૫-૨૬૨

उपोद्घात.

"Knock, and it shall be opened into you" अर्थात् 'ठेलो एटले दरवाजो तमारा माटे खुलशे' ए बाइबलनु वाक्य साचु छे. बाईबल बनावनार मनुष्य बाईबल बन्यु ते जमानाना माणसो करता 'ठेलवा' मा वधारे खतीलो होवो जोइए, परन्तु धर्मना द्वार पोतानी अपूर्ण शक्तिवडे ठेलता त्हेने बराबर आवडया नहि, तेमज द्वार तद्दन खुल्ला थाय त्या सूधी ठेल्या करवानी ते धीरज राखी शक्यो नहि; नहि तो अमेरिका

पण त्हेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओ कारणा पाछळनुं सत्य अमुक अमुक अगे ज जोवा पाम्या.

मनुष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ चालीए तो माटीथी शरीर शणगारनारा, तेथी आगळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने त्हेनी शय्यामा मोकली खुश थनारा, वळी आगळ, डाखला अन डरामणी पोकोथी देवने प्रसन्न करनारा; वळी, दयामय देवने हिंसाथी पामवा मथनारा अने छेवटे खुशालीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जूदी जूदी मान्यताना लोकोए वारणा ठेलेला तो खरा, पण पोतपोतानी शक्ति अने खतना प्रमाणमा त्हेमने ए प्रमाणे जणायु—अने एने ज तेओ 'सत्यसर्व' अथवा 'धर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असख्य प्राणीओ

पण त्हेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओ वारणा पाछळनुं सत्य अमुक अमुक अशे ज जोवा पाम्या.

मनुष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ चालीए तो माटीथी शरीर शणगारनारा, तेथी आगळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने त्हेनी शय्यामा मोकली खुश थनारा; वळी आगळ, डाखला अने डरामणी पोक्रोथी देवने प्रसन्न करनारा; वळी, दयामय देवने हिंसाथी पामवा मथनारा अने छेवटे खुशालीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जूदी जूदी मान्यताना लोकोए वारणा ठेलेला तो खरा; पण पोतपोतानी शक्ति अने खतना प्रमाणमा त्हेमने ए प्रमाणे जणायु—अने एने ज तेओ 'सत्यसर्व' अथवा 'धर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असख्य प्राणीओ

मध्ये एवा पण प्राणीओ थई गया छे—थाय छे अने थशे, के जेओ ते 'सत्पंथ' ना आगळनुं द्वार उघाडवामां सतत् प्रयासथी—संपूर्ण सत्वथी—उल्लासी जोरथी मच्या रहे छे अने आखरे ए द्वाराओ तेमना माटे खुल्लो थई रहे छे

एवा फतेहमन्द प्राणी कांई एक-बे नथी, हजार—लाख नथी पण असंख्य छे एवा आश्चर्यकारी छे के, ते सर्वेए एक सरखुं ज जोयुं छे

आपणे हाल जे चीजो सूक्ष्मदर्शकयन्त्र, दूरबीन आदि उत्तम साहित्यवडे पण जोई शकता नथी ते चीजो आपणा पहेला हजारो वरसो उपर थई गयेला ते 'फतेहमन्द ठेवनाराओ'ए जोई हती पाणी, पृथ्वी, हवा आदिना बारिकमां बारिक परमाणुमां केटला जीव छे ते सूक्ष्मदर्शकयन्त्र विना तेओ जोई शक्या हता होकायन्त्र, आगबोट अने बीजां हजारो साहित्य

छता अमेरिकाखड मात्र ४१२ वरस उपर ज शो-धायो; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अगाउ ते खड अने एवी बीजी बारसो भूमिओ पेला 'फतेहमद ठेलनाराओ'ए जोई हती अने त्हेनी नोंध करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध तो हजी हमणा ज थई छे, परतु त्हेमनी झडपने शरमावी दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए एथी पण थोडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकली उत्तर मेळवी शकता॥

ए 'फतेहमद ठेलनारा' नी फतेह कया कारणने आभारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने उद्भववा योग्य प्रश्न छे शरीररूपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे ज्ञान रुप ज छे. परन्तु कर्मरूपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ

॥ 'आहारक लब्धि' वडे, × ज्ञानावरणीय कर्मो.

अन्दे एवा पण प्राणीओ थई गया छे—थाय छे अने थशे, के जेओ त 'सत्यसर्व' ना आगळनुं द्वार ठे ठवामां सतत् प्रयासथी—संपूर्ण खंतथी—राक्षसी जोरथी मच्या रहे छे अने आखरे ए दरवाजा तेमना माटे खुल्ले थई रहे छे

एवा फतेहमन्द प्राणी कोई एक-बे नथी, हजार —अबज नथी पण असंख्य छे एवा आश्चर्यवार्ता छे के, ते सर्वेए एक सरखु ज जोयु छे

आपणे हाथ बे चीजो सूक्ष्मदर्शकयन्त्र, दूरबीन आदि उमदा साहित्यवडे पण जोई शकता नथी ते चीजो आपणा पहेला हजारो वरसो उपर थई गयेला ते 'फतेहमन्द ठेकाणाओ'ए जोई हती पाणी, वीर्य, हवा आदिमां बारिकमां बारिक परमाणुमां कटका जीव छे ते सूक्ष्मदर्शकयन्त्र विना तेओ जोई शक्या हता लोकाग्र, भागबोट मन चीजो हजारो साहित्य

छता अमेरिकाखंड मात्र ४१२ वरस उपर ज शोधायो; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अगाउ ते खंड अने एवी बीजी बारसो भूमिओ पेला 'फतेहमद ठेलनाराओ'ए जोई हती अने त्हेनी नोंध करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध तो हजी हमणा ज थई छे, परतु त्हेमनी झडपने शरमावी दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए एथी पण थोडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकली उत्तर मेळवी शकता*

ए 'फतेहमद ठेलनारा' नी फतेह कया कारणने आभारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने उद्भववा योग्य प्रश्न छे शरीररुपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे. ज्ञान रुप ज छे. परन्तु कर्मरुपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ

* 'आहारक लब्धि' वडे, × ज्ञानावरणीय कर्मो.

गयुं छे प्रथम शुभ* अने पछी शुद्ध* कार्योवडे, घुमारी दूर करवाथी दीपक आपोआप प्रकाशे छे पछी सर्व पदार्थ अने सर्व भाव तादृश्य देखाय छे

आवा 'फतेहमन्द ठेल्नारा' मोए दरवाजो उघडतां वे वे स्पष्ट जोयुं तेनी मोक्ष आपणा हाथमां आवे तो आपणी केवा भाग्यशाळी! अरे, तेमणे ते अनुग्रह कीधो पण छे 'ज्ञानना दरवाजो' केम खोलवो तेने माटे तेमो कुंचीओ मूकता गया छे; एटलुंज नहि पण दरवाजो खुल्यां शुं शुं नजरे पडशे ते पण तेओ नोंधता गया छे, के जेथी थोडुं जोवाथी तेने संपूर्ण तरीके आपणे मानी न बेसाए आपण माटे हवे एटलुं ज करवानुं रहे छे के, ते दरवाजे जइ ठमवुं अने पछी सूचव्या प्रमाणे कुंचीथी, ते दरवाजो ठेलवा करवो

---

* शुभ कार्यो एटले पुण्यना कार्यो अने शुद्ध कार्यो एटले धर्मना कार्यो शुभ ए पुण्य कार्यानुं छे

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इच्छा करशे; परन्तु ज्या सर्व महाजनोनी नोंध एक सरखी छे त्या कोनु नाम देवु ? हा, ते सर्वनी **नोंधने** एक नामथी ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छे एने हु तो 'वीतरागनोंध' ए नामथी ओळखाववु वधारे पसद करु छु, कारण के ए नोंव राग अथवा पक्षपात **वगरनी** छे अथवा एवा महाजनोनी **करेली** छे. परन्तु जनसमाज तेहेने 'जैनशास्त्र' नामथी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लडी पडता हेतुनी दरकार करवा सूचवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीतु नाम वापरवा छूट लइश

ए 'जैनशास्त्र' एम सूचवे छे के, 'धर्म रुपी सुदर महेलमा प्रवेश करवा माटे प्रथम सम्यक्त्वनो

आडवर वगरनी छे, अने जैन सिद्धातो स्वाश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवा उमदा सत्यो छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अथइति वाचनारने थशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ थयो मानीश.

सम्यक्त्वना सबधमा जे जे विविध विषयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो सक्षेपमा समावेश आ पुस्तकमा करेलो जोवामा आवशे. धर्मज्ञान आपनारी शाळाओ वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाभ थवा आशा रखाय छे.

सनातन **जै**न मतावलबी मुनीश्री **म**णीलालजी महाराज (लिबडी समुदायना पूज्य श्री **मो**हनलालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अत:करणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा-

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इच्छा करशे; परन्तु ज्यां सर्व महाजनोनी नोंध एक सरखी छे त्या कोनु नाम देवु? हा, ते सर्वनी **नोंधने** एक नामथी ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छे एने हु तो 'वीतरागनोंध' ए नामथी ओळखाववु वधारे पसद करु छु, कारण के ए नोंव राग अथवा पक्षपात **वगरनी** छे अथवा एवा महाजनोनी **करेली**छे. परन्तु जनसमाज तेने 'जैनशास्त्र' नामथी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लढी पडता हेतुनी दरकार करवा सूचवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीतु नाम वापरवा छूट लइश

ए 'जैनशास्त्र' एम सूचवे छे के, 'धर्म रुपी सुदर महेलमा प्रवेश करवा माटे प्रथम सम्यक्त्वनो

दरवाजा खोलवा जोइए ? दरवाजेथी ज मह्हेलमां प्रवेश थाय छे अने यात्रा कोण कबुल नहि राखे ! अमदावादथी मुंबई जबु होय तेने माटे हमणा तो आगगाडीनी सगवड घणी सारी छे, तो पण कोई गामडासो रहीश टीकीट आफीस ज न जाणतो होय तो ? वगर प्लेटफार्म उपर आवीने वडवाण जवानी गाडी आवतां हर्ष सहित–अरदी मुंबई पहोंचवानी–आशाथी–तेमां बेसी जाय तो ।

माटे धर्मशास्त्र रुपी रस्ते ट्रेन होवा छतां 'सम्यक्त्व' अथवा 'खरा ज्ञान'नी माहती वगर धर्मसाधननो अवळो उपयोग ज थवानो

'सम्यक्त्व' शु तत्व छे, तेथी उलटुं 'मि थ्यात्व' शु तत्व छे, दरेक बाबतपर विचार करवामे 'सम दृष्टि' केटली विशाळ छे, 'वीतरागनेंाथ' केवी पक्षपात वगरनी छे–केवी प्रेम वगरनी छे–

आडंबर वगरनी छे, अने जैन सिद्धांतो स्वाश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवां उमदा सत्यो छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अथइति वाचनारने थशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ थयो मानीश.

सम्यक्त्वना संबंधमा जे जे विविध विषयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो संक्षेपमा स-मावेश आ पुस्तकमा करेलो जोवामा आवशे. धर्म-ज्ञान आपनारी शाळाओ वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाभ थवा आशा रखाय छे.

सनातन जैन मतावलंबी मुनीश्री मणीलालजी महाराज (लिंबडी समुदायना पूज्य श्री मोहनलालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अंतःकरणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा-

सिधवा नागार का आरत सादर भट,

सम्यक्त्व.

प्रकरण १ लुं.

प्रवेशक.

(Introductory)

श्री 'भगवतीजी' सूत्र सत्य कहे छे केः—

नत्सा जाइ नत्सा जोणी। नत्तं ठाण नत्त कुल।
न जाया न मुव्वा जथ।सव्वे जीव्वा वीअणं तसो ॥

अर्थः-"एवी कोइ पण जाति रही नथी, एवी कोइ योनि रही नथी, एवुं कोइ स्था-

न रह्यु नथी, पणु कोइ कुळ रह्यु नथी, के ज्यां आ जीव जन्म्यो-मुओ न होय "

जीव ते सर्व जगाए अनंत अनंत वार फर्यो छे

ए फरवामां जगर जन्म-मरणमां जे अ सह्य वेदना समायली छे ते, मनुष्य मायाना आवरणथी भूली ज जाय छे श्री'उत्तराध्य यन'मां ज्ञानी महात्मा स्पष्ट पोकार करे छे के'

जम्म दु:खं जरा दुक्खं । रोगाय मरणाणिय।
अहो दुखो हु संसारो । जथ्य किस्सोंति जंतुणो॥

अर्थः-"जन्म दु:खमय छे; जरा(वृद्धावस्था) दु:खमय छे; रोग अने मरण पण दु:खमय छे अहो! आ संसार ज दु:ख रुप छे, के जेने विषे जंतुओ रीबाय छे "

काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, विषय, कषाय अने प्रवृत्तिनां सेवतथी जीव नर्क, निगोद, मनुष्य, तिर्यंच, देव आदि स्थितिओमां उपर कहेलां जन्म-जरा-मरण अने आधि-व्याधि-उपाधिनां असह्य दुःखो पराधिनपणे भोगवीने पण अद्यापि तृप्त थतो नथी

विचारवुं जोइए के, आ मनुष्य भव घणो दुर्लभ छे; अने मळेली सामग्रीओ फरी फरी हाथ आवती नथी, माटे श्रीवीर प्रभुए गौत्तम ऋषिने आपेलो नीचेनो गुरुमंत्र दरेक मुमुक्षुजने सावधान मनथी जपवो जोइएः—

दुलहेखलुमाणुस्सेभवे। चिरकालेणव्विसव्वपाणीणं।
गाढ़ाय विव्वागकम्मुणा। समयगोयममाप्पमायए।

अर्थः-"मनुष्य जन्म मळवो घणो दुर्लभ छे;

घणा काळे पण मव मीयने ते जन्म दुलभ छे, (कारण के) गाढां (निकाचित) कर्मो आ-डां आवे छे माटे हे गौतम ! समय मात्रनो प्रमाद न करीश ''

मनुष्य भव साथे बळी बीजी सामग्रीओ मळी छे, तेनो लाभ अवश्य लेवो जोइए:—

मनहर

रूडो 'मनु-भव ' 'आर्य-क्षेत्र' मे 'उत्तम कुळ',
'लक्ष्मी तणी ल्हेर' 'लांबुं आयखुं ' प्रमाणीए,
'पांचे इन्द्रि पुरी' मळी, 'शरीर निरोगी' मळी,
'समागम साधु तणो' भेपी शास्त्र सुणीए ।
'प्रतीति धरम केरी ", 'इच्छा तप-संयमनी' ,
एवी ' दश जोगवाइ' दुर्लभ मानीए
मळ्यो जे साहित्य सारां, करीए न ते भकारां,
रुडा उपयोग वडे, आतमने तारीए २

प्रकरण २ जुं.

गुरु.

दस अनुकुळ जोगवाइमांनी पहेली ७ प्रायः* जन्मथी ज मळे छे एटले एमां (आ जन्ममा तो) आपणो हाथ थोडो ज होय छे परन्तु आठमी जोगवाइ साधुसमागम ते केटलेक अंशे आपणा हाथमां छे; अने नवमी-दसमी

*प्राय' ए शब्दथी समजवुं के लक्ष्मी कोइने जन्मथी ज मळे छे अने कोइने पाछळथी वेपारादि वडे मळे छे जन्मथी जे सात जोगवाइ मळे छे ते पण अलबत पूर्व जन्मोमा आपणा हाथे ज रळेली छे.

जोगवाइ थी आठमीना पेटामां ज आवी जायछे

एक प्रसंगे श्री गौतम स्वामिए श्री महा वीर प्रभुने पूछ्युं के, "हे भगवन्! साधुनो स मागम करवाथी शुं फळ थाय?" त्यारे ते ज्ञानी महात्माए जवाब आप्यो के"—

सवणे नाणे विनाणे । पच्चक्खाणेय संजमे ।
अणह्नये तवे चेव । वोदाणे अकिरिया सिद्धि ॥

अर्थ -"साधुसमागमथी 'श्रवण'नो लाभ मळे; ए श्रवणथी 'ज्ञान-विज्ञान' फळ थाय, ज्ञान-विज्ञानथी पापने त्यागवारुप 'पच्चक्खा-ण' (प्रत्याख्यान) फळ थाय; तेमांथी इन्द्रिओ उपर काबु राखवा रुप 'संयम' फळ थाय; ते-मांथी 'अनाश्रव' (अथवा नविन पापकर्म अ टकाववा) रुप फळ थाय; तेमांथी 'तप' फळ

थाय (कारण के अनाश्रवी जीवो हळुकर्मी होवाथी तप करवा सहज इच्छे) अने तेथी जूनां कर्मने भस्मीभूत करनारुं 'निर्जरा'रुप फळ थाय एम परिणामे 'मोक्षफळ' अथवा सिद्धि मळे"

साधु-समागमनुं सार्थक त्यारे ज कहेवाय, के ज्यारे तेमनो उपदेश श्रवण थाय अने ते उपदेशने अमलमां मुकी मोक्षसाधना माटे यथाशक्ति प्रयत्न थाय अहो! आपणे केवा मंदमति छीए-केवा दुर्भागी छीए के, श्री वीतराग देवना अनुयायी मुनीराजो स्थळे स्थळे विहार करी सत्योपदेश करे छे तो पण प्रमाद, लोभ अथवा मोहने लीधे आपणे तेमनां दर्शननो अने उपदेशश्रवणनो लाभ लइ

शकता नथी ' जे मोघ ज्ञानावरणीय, दर्श-
नावरणीय, मोहनीय अने अंतराय ए चारे
' घातीकर्म ' तथा बदना आयुष्य, नाम,
अने गोत्र ए चारे ' अघातीकर्म ' नो नाश
करी संसारसमुद्रभ्रमणथी उगारवानी श-
क्ति धरावेछे ते बोधनी गरज न राखीए तो-
आपणे केवा आत्मघाती कहेवाइए ! मगर
माग्ये आवती लक्ष्मीने धक्को मारनारा आ
पणा जेवा कमभक्मना कोण होय !

परन्तु दरेक माणसे साधु अथवा गुरुने
पारखवामां बुद्धि वापरवी जोइए कारण के
जे पद उपर आठसो वर्षो मक्तिभाव राख
वा मोटा पुरुषो मसामण करे छे ते पदनी
मालख सौने लागे अने तेथी, योग्यता न हो

छतां, घणाए पुरुषो मात्र द्रव्यना लोभ-
ो अगर मानपाननी आशाथी ए पद धा
ण करेछे एवा गुरु पोते ज तरी शकता नथी
ो बीजाने शुं तारवाना ?

'थाळ भर्युं दुध थोरनु रे, उजळु अधिक प्रमाण;
भेसना दुधथी लागे भलुरे, पण पीनारना जाय प्राण.'

माटे—

'रुपे नवि राचिये—एना गुण तणो करीए तपास,
'सदा बुद्धि साचीए—'

हमेश विचार करवो के, गुरु कइ वृत्तिथी उपदेश करे छे—अने एनो उपदेश आपणी न्यायबुद्धि—सदसद्विवेकबुद्धि मानी शके तेवो छे के नहि ? धर्म के जे सुख माटे करवामां आवे छे ते कोइ दिवस कोइ पण (ना-

नामां नाना पण) प्राणीने दु:खी करनारों थवो नथी; अने कोइ पण प्राणीने दु ख प्राप्त थई काम धर्मना नामे उपदेश तेने तमारे कोइ दिवस गुरु के साधु मानवो नहि

जेओ अमुक प्रायसने हिंसागर्भित उपदेश करनार शरीक जाणे छे छतां तेने पूजे छे—माने छे,तेओ घणुखरुं लालचु होवाथी ज एम करे छे गुरु काइ मंत्रजंत्रथी मारुं दारिद्र फेडे मारा वैरीने दुःखी करे, मने छोकरां आपे, इत्यादि लालचथी ज लोभी लोको ठगीने भमी रहे छे एक अनुभवी कहेछे के:

" गुरु लोभी शिष्य लालचु, दानु खेले दाव
" होतु दम्मा बापडा, बैठ पथ्थरकी नाव "

धर्मने कर्मथी नूदो जाणवो जोइए संसा

व्यवहारमां नीतिनो उपदेश उत्तम छे,
ण धर्मनो उपदेश नीतिथी पण एक डगलुं
आगळ वधीने, पुराणां पापोने धोता अने न-
ां पापोने आवतां अटकावता शीखववानो
ावो करे छे; तो पछी धर्मने नामे कोइ पण
जातनुं एवुं काम केम ज थइ शके, के जेथी
कोइ प्राणीने पीडा थती होय? अने एवो उप-
देश करनार माणस कदाच एम कहे के ' ए
तो धर्मना माटे करवानुं छे, ' तो शुं धर्मना
खपी प्राणीओए तेथी ठगावुं जोइए ? शुं ते-
ओ तेने धर्मगुरु कहेशे के व्यवहारगुरु ? वि-
द्वनोए व्याजवी ज कह्युं छे केः—

सत्य नास्ति तपो नास्ति । नास्ति चेन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूते दया नास्ति । एते चाण्डाललक्षण ॥

अर्थ -"जेनामां सत्य नथी, तप नथी, इन्द्रि निग्रह (जितेन्द्रियपणुं) नथी, प्राणीमात्र मोटा ज नहि पण नानामोटा सर्व–तरफ या नथी, ते,गुरुनो नहि पण चंडाळनो लक्ष समजवो "

श्री 'सूयगडाग' सूत्रमां उपदेशक(गुरु) योग्यताना संबंधमां कह्युं छे के:-'छिन्न सुय अणासव्वे' अर्थात् जेमणे आश्रवद्वार (पापन गरनाळां) छेद्यां छे 'ते धम्मं सुद्धमास्खंति' तेओ ज मात्र शुद्ध धर्मोपदेश करी शके छे

वेदधर्ममां 'अहिंसा परमो धर्मः' ए मुख्य मंत्र छतां ते धर्मना कोइ उपदेशक हिंसामिश्र काम करवा सलाह आपे तो ते 'गुरु' नहि; जैन धर्मना कोइ साधु, 'दया' ने धर्मनुं मूळ

मनवा छतां दयानो भंग थाय एवो उपदेश करे तो ते पण 'गुरु' नहि

शास्त्रमां सद्गुरुना २७ गुण विस्तारथी कहेला छे अने ते सर्व आपणी विवेकबुद्धि कबुल राखे तेवा छे

कान, आंख, जीभ, नाक अने त्वचा ए पांच इन्द्रिओना निग्रह रुपी ५ गुण; हिंसा–जूठ--चोरी–मैथुन अने परिग्रह (धन–माल आदि) ए पांचथी सर्वथा निवर्तवा रुपी 'पांच महाव्रत'ना ५ गुण; क्रोध–मान–माया–लोभ ए चार कषायना निग्रहरूप ४ गुण;मन-वचन अने कायाना योग शुद्ध प्रवर्त्तावचा रुप ३ गुण; धर्ममां दृढता; करणसत्य (पडिलेहणा); रोग-परिसहनी सहिष्णुता (शांत मनथी खम-

धापणु), मरणथी निडरपणु; क्षमा; वैराग्य; चारित्र; दर्शन (समकित); ज्ञान; रात्रीभोजन त्याग; ए २७ गुणवाळाने 'सद्गुरु' कहेवाय छे।

गुरुनी परीक्षामां घणी सभाळ राखवा जेवी आ जमानो छे; कारण के 'संसार असार छे', 'काळ कोइने मुकनार नथी', 'धर्म करो तो ते सुखी थशो' एवो स्वाभाविक बोध साधु अने गुरुओ करे छे अने ए स्वाभाविक बोधथी पोतानुं गुरुपणु सामा पासे कबुल कराबीने पछी तेने स्वार्थजाळमां फसावे छे। 'तमे देवन रीझववा यज्ञ करो, पूजा करो, रसोडा कराबो' एवो उपदेश आपी ए रस्ते पोतानुं कमीशन मेळवी ले छे परन्तु खरा अनोए विचारवानुं ए छे के, जे देव सुखा

मतथी रीझाय ते देव खुशामत वंध थतां कोपवानो के बीजुं कांइ? अने देवने कांइ फळ आपवानी सत्ता नथी तेमज पापोनो करनार माणस देवनी खुशामतथी शिक्षामांथी छूटी जाय ए शुं बनवा योग्य छे? माटे जे कांइ उपदेश गुरु करे ते तरफ परीक्षकदृष्टिथी, गुरुना हेतु अने स्वभावनुं मनन करी तेनी किमत करवी. सोनानी किमत आंकवा माटे कसोटीनो पथ्थर एक उमदा साधन गणाय छे, तेमज 'निर्वद्य उपदेश अने तदनुसार आचार' ए ज कसोटी वडे गुरुनी किमत थइशके छे *

---

*शब्द--रुप--रस--गंध अने फरसना विषयोमा लुब्ध थयेला, घर छोडीने नीकळवा छता अ-

प्रकरण ३ जु

सम्यक्त्व (समकित)

गुरुनी पसंदगी पाछळ आटली बधी संभाळ अने सावचेती राखवानु कारण प्रयोजन न होइ मोक्ष, कारण के, कारण वगर कार्य

पासरा-डेरा-मठ-मंदीर-मसीद के चर्चना मालिक थइ पडनारा, स्त्री-पुत्र-स्नेहीने छोडी नीकळना छतां शिष्य-शिष्यानी खटपटमां रच्यापच्या रहेनारा, मोहन त्यागवा छतां क्रोधरूपी मदोन्मत्त हाथी उपर अहोनिश आरूढ थयेला, एमाने 'गुरु' तरीके मानवा के नहि ए आ उपरथी स्पष्ट समजाशे

वनतुं नथी गुरु तरफथी आपणने बेवडो लाभ मळी शके छे. एक तो, तेमनो उपदेश श्रवण करवाथी उमदा तत्त्व समजी शकीए; अने बीजुं ए के, गुरु ए सद्‌वर्त्तननो जीवतो दाखलो होवाथी पुस्तको के व्याख्यान करतां तेमनो चहेरो वधारे सारी असर करी शके तेमनी शांत मुखमुद्रानुं गांभीर्य अने ढळेली आंखोनो प्रकाश आपणी आंखो द्वारा आपणामां प्रवेश करे छे अने मधुर रवरव करता रुपेरी झरा जेवो तेमनो वाग्प्रवाह आपणा कान वाटे प्रवेश करे छे तेमज तेमनो शुद्ध आचार आपणा मगज द्वारा प्रवेश करेछे

खरेखरा—आत्मार्थी—निर्दंभी गुरुनो एवो अलौकिक प्रभाव छे. हवे एवा गुरु पासेथी

आपणे शिखवानुं शुं ? शुं मात्र मों जोइने ज बेसवाथी सार्थक थशे ?

सारे गुरु पासेथी मेळववानुं शु होइ शके 'समकित' अथवा 'सम्यक्त्व' सम्यक् एटले रुडा प्रकारे जाणवापणुं ते एनो सरळ अर्थ एटलो ज के साचाने साचा तरीके ओळ-खवुं ते (अलबत, एमां खोटाने खोटा त-रीके ओळखवानो समावेश आपोआप ज था य छे) साचा खोटानुं जेने रुडा प्रकारे जा णवापणु थाय ते तो पछी मनमांथी रागद्वे षादिने दूर निकाळ ज करे; जेथी ते सर्व प्रा णी उपर अने सुखदुःख उपर समभाव—समा न दृष्टि राखे; ए कारणथी पण 'सम्यक्त्व' नी व्याख्या 'समभाव' पण थइ शके

धर्मनो पायो ज समकित छे पडता प्राणी-
ने धरनार-झीलनार तेने 'धर्म' कहे छे पण
झीलनारमां अमुक जोर (Force) जोइए.
एक केरी झाड उपरथी पडे छे, तेने पाडनार
पृथ्वीनुं 'गुरूत्वाकर्षण' (Gravitation)
नामनुं तत्व छे हवे तमारे ते केरीने झीलवा
विचार होय तो ए 'गुरूत्वाकर्षण' जेटला-
ज जोरवाळो अगर तेथी वधारे जोरवाळो
हाथ धरवो पडशे जे कुदरतमां केरीने पा-
डनार 'गुरूत्वाकर्षण' तत्व रहेलुं छे ते ज
कुदरतमां प्राणीमात्रने पाडनार 'पाप' तत्व
पण रहेलुं छे कोइ न जाणे तेम ते बन्ने त-
त्वो चीजोने अने प्राणीओने नीचे खेंचे छे.
केरीने 'गुरूत्वाकर्षण'नी असरथी बचावना-

रा तमे छो तेम प्राणीने 'पाप'ना आक-
र्षणथी बचाववा माटे 'धर्म' छे; तमे जेम
केरी पर 'गुरुत्वाकर्षण'नी असर न थवा
देवा माटे एटला ज भगरथी बधारे जोरथी
हाथ धरो छो; तेम 'धर्म' पण 'पाप'ना
आकर्षण जेटला ज अगर तेथी वधारे जोर-
वाळुं 'समकित' धरे छे

आ प्रमाणे सम्यक्त्व ए धर्मनो हाथ के
पाया धर्मनो पायो छे श्री 'उत्तराध्ययन'
सूत्रमां कह्युं छे केः

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं । दंसणे उ भइयव्वं ॥
सम्मत्त चरित्ताइं । जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ १ ॥
नादंसणिस्स नाणं नाणेण विणा न होंति चरणगुणा
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो। नत्थि अमुक्कस्स निव्वाणं॥२॥

अर्थः-" 'समकित विना 'चारित्र'(मुनीपणुं तेमज श्रावकपणुं) नथी. 'दर्शन' अथवा 'समकित'ज्यां छे त्यां उभय ('समकित' अने'चारित्र' बन्ने)छे 'समकित' अने'चारित्र'ए बेना युगलमां प्रथम'समकित'आवे छे 'समकित'विना'ज्ञान'नथी;'ज्ञान'विना'चारित्र'नथी. अने ए गुण विना 'कर्ममुक्तपणुं' नथी; तेमज कर्मथी नहि मुकायलाने 'निर्वाण' नथी."

माटे समकित प्रथम मेळववुं जोइए समकितीनी सुंदर व्याख्या श्री'उत्तराध्ययन'सूत्रमां आ प्रमाणे आपी छेः--

तहियाणंतु भावाणं सभावे उवएसणं ।
भावेण सद्दहं तस्स समत्तं तं वियाहियं ॥

अर्थः-" 'जातिस्मरण' ज्ञाने करी अगर गु-

रूना उपदेशे करी अंतःकरणना शुभ भावेथी 'नवतत्त्वो ने* जाणे ते समकिती जीव कहीए
आ व्याख्यामां जाणपणुं तेमज अंत क रणनो शुद्ध भाव बन्नेनो समावेश छ

समकितना ° भेद छेः—

१ द्रव्य समकित, २ भाव समकित, ३ नि

---

* नवतत्त्वमां सर्व जाणपणानो समावेश थाय छे तेमां समग्र शास्त्रो, सर्व विद्या (Science), सर्व तत्त्वज्ञाननो संपूर्ण समावेश थाय छे (१) जीव (२) अजीव, (३) पुण्य (४) पाप, (५) आश्रव (६) संवर (७) निर्जरा (८) बंध अने (९) मोक्ष आ विषय घणो मोटो होवाथी ए उ पर श्री 'स्या जै ज्ञा प्र मंडळ' तरफथी कोइ वखत एक अलायदुं पुस्तक बहार पडशे

श्चय समकित:४.व्यवहार समकित;५ निःसर्ग समकित. ६ उपदेश समकित;७ रोचक समकित;८.कारक समकित; ९ दीपक समकित

(१) " द्रव्य समकित ":—श्री वीतराग देव अगर तेमना आज्ञानुसारी मुनीराजनो बोधसांभळी कोइ माणस मात्र श्रध्धाथी— भरोसाथी तेने सत्य माने,परन्तु तेनो परमार्थ समजे नहि; एवा जीवनुं जे समकित तेने 'द्रव्य समकित ' कहेवाय

(२) " भाव समकित ":—' जीव—अजीव' आदि 'नवतत्व','काइया' आदि ' पचीस क्रिया' ए विगेरे अनेक भेद जाणी,शुद्ध अंतःकरणथी सर्दहे ते माणसनुं समकित ते 'भाव समकित' कहेवाय.

(१) "निश्चय समकित" -ज्ञान—दर्शन—चारित्र—तपः ए चारने विषे निश्चय-व्यवहारादि २५ बोलनु स्वरूप जाणे तेवा माणस नुं 'निश्चय समकित' समजवु आ सम कित आव्या पछी पाछुं जतुं नथी

'द्रव्य समकित'मां मात्र श्रवण अने श्रद्धानो समावेश थाय छे,—तेथी आगळ व धीने 'भाव समकित'मां तत्त्वोनुं जाणपणु करवानो समावेश थाय छे; अने तेथी पण आगळ वधीने 'निश्चय समकित'मां जुदी जु दी दृष्टिए (from diffeint points of view) सत्यनु सिंहावलोकन करवानो समा वेश थाय छे दरेक बाबत उपर सिंहावलो कन करवाने माटे'२५ बोल'अथवा'२५दृष्टि'

छे.एक पडखुं सोनाथी अने बीजुं रूपाथी रसेलुं एवी एक पुतळी माटे वे माणसने थयेलो वाद-विवाद जगजाहेरछे एकनी दृष्टि सोने रसेला पडखा तरफ होवाथी ते माणस ते पुतळाने सोनानुंज कहेवामां दृढ रह्यो अने बीजानी रूपेरी भाग तरफ दृष्टि होवाथी,ते पुतळुं रूपानुं ज छे एम नहि माननारने,ते गाळो देवा लाग्यो; पण वन्ने भाग तरफ दृष्टि फेरवनार त्राहित लोकोने आ कजीओ करनारानी मूर्खता तरफ मात्र हास्य ज आवतुं दुनियामां आटला वधा धर्मो उभा थया अने धर्मने नामे कजीआ थया ते आ ज कारणने लीधे अमुक धर्मने सर्वोत्तम तरीके मनाववा माटे आ कथन थयुं छे एम न समजतां,वांचनारे एटलुं ज वि-

धारवुं के, सांकडी दृष्टिथी—अमुक एक ज दिशा-मां गोंधी राखेली दृष्टिथी जोवायलुं ते कांइ संपूर्ण सत्य होइ शके नहि 'जैन धर्म' ए नाम आपणे घडीभर बाजुए मुकीए अने ए नाम थी ओळखाता धर्मनुं शिक्षण ज आपणे शीखीए, तो पण तेनी विशाळ दृष्टि आपणने तेना सत्य विषे सर्टिफीकेट रुप थइ पडे छे-पृथ्वीनी सपाटीथी आपणे जेम ऊंचा चढीए तेम आपणे वधारे जोइ शकीए छीए तेमज वधारे विशाळ दृष्टिथी (एक-ब नहि पण पचीस दृष्टिथी) जोवायलुं-विचारायलुं सत्य व धारे माननीय होइ शके ए कबुल करवुं मुश्केल नथी [ए 'पचीस दृष्टि'नुं विवेचन चोथा प्रकरणमां कर्युं छे]

(४) " व्यवहार समकित ":-'संवेग'* आदि पांच लक्षणथी प्रवर्तवुं ते 'व्यवहार समकित' [एक पुस्तकमां लख्युं छे के:— ६७ बोलमांना ६१ बोलना गुणे करी सहित 'उपसम' अने 'क्षयोपसम' × समकिती जीवनुं जे समकित ते 'व्यवहार समकित.'

(५) " निःसर्ग समकित ":—मुनीमहाराजना उपदेश विना'जातिस्मरण' ज्ञाने करी नवतत्वादिनुं स्वरूप जाणवामा आवे, ते 'निःसर्ग समकित'; अथवा, जैन मतने नहि

---

*'संवेग' आदि लक्षणो अने '६७ बोल'नो खुलासो ९ मा प्रकरणमा वाचो

× 'उपसम' अने 'क्षयोपसम' समकितनो खुलासो प्रकरण ९ मामा वाचो.

जाणनारो* परन्तु भद्रिकस्वभावी माणस सूर्य सन्मुख आतापना लेतां, बेलेबेले तप करतां, ज्ञानने आवरण रूप 'ज्ञानावरणीय' कर्मनो क्षयोपशम करे त्यारे तेने 'विभग ज्ञान' उत्पन्न थाय अने तेथी जीव—अजीवनं स्वरूप जाणे, तेथी जे जे धर्मो आरंभ परिग्रहवाळा छे ते सर्व तरफ विराग उत्पन्न थाय अने मात्र निरारंभी—अपरिग्रही (जैन)धर्मने ज साचो माने अने 'विभंगज्ञान'नी हानी करी 'अवधि ज्ञान' पामी, 'केवळज्ञान' उपार्जन करी अंते मोक्ष पामे; एवा माणसनुं समकित पण "नि सर्ग समकित" कहेवाय.

* आथी जैनमतनी उदारवृत्ति (Liberal mindedness) साबीत थाय छे

(६) ' उपदेश समकित ":-गुरु आदिना उपदेश करीने मळेलुं समकित ते " उपदेश समकित" कहेवाय

(७) "रोचक समकित":--श्री वीतरागना वचन उपर रुचि राखे, धर्म करवाना मनोरथ करे पण अंतराय कर्मने लीधे ते मनोरथ पुरा पाडी शके नहि; तो पण धर्मनी शुद्ध सर्दहणा–परुपणा करे अने लोकाविरुद्ध आचरण न करे, एवा पुरुषनुं समकित ते "रोचक समकित" कहेवाय (श्री कृष्ण अने श्रेणिक राजानुं समकित आ प्रकारनुं हतुं)

(८) " कारक समकित ":—" रोचक समकित "थी एक पगलुं आगळ वधेला जीवने " कारक समकित " होय; एटले के

जाणनारो* परन्तु भद्रिकस्वभावी माणस, सूर्य सन्मुख आतापना लेतां, बेलेबेले तप करतां, ज्ञानने आवरण रुप 'ज्ञानावरणीय' कर्मनो क्षयोपसम करे त्यारे तेने 'विभंग ज्ञान' उत्पन्न थाय अने तेथी जीव—अजीवनुं स्वरूप जाणे, तेथी जे जे धर्मो आरंभ परिग्रह वाळा छे ते सर्व तरफ विराग उत्पन्न थाय अने मात्र निरारंभी—अपरिग्रही (जैन)धर्मने ज साचो माने अने 'विभंगज्ञान'नी हानी करी 'अवधि ज्ञान' पामी, 'केवळज्ञान' उपार्जीत करी अंते मोक्ष पामे; एवा माणसनुं समकित पण "नि सग समकित" कहेवाय,

* आथी जैनमतनी उदारवृत्ति (Liberal-mindedness) साबीत थाय छे

ण गुप्ति'* आदि शुद्ध क्रियाओ करे.

'रोचक' समकिती जीव चोथे 'गुणस्थाने' होय अने 'कारक' समकिती जीव छठे-सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) "दीपक समकित":—दीवो बीजा उपर प्रकाश नाखे पण पोतानी तळे तो अंधारुंज रहे तेम, 'दुर्भवी'+ अने 'अभवी' जीवो

* ३ गुप्तिः—मन—वचन—काया ए त्रणने पापथी गोपाववा अर्थात् पाप क्रियामा न प्रवर्त्तावबा ते.

+ घणा भव भ्रमण करवा छता पण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुशीबते पण मोक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटली दवा लगावो तो पण वाळ नहिज ऊगवाना.)

" कारक समकित " वाळो जीव धर्म उ
पर रुचि पण राखे अने ते प्रमाणे धर्म आ
चरे पण खरो ते जीव पंचसमिति',* 'त्र

* 'पांच समिति' —(१)दृष्टिए जोइने चा
लवु ते 'इर्या समिति (२) विचारी—विचारीने नि
र्वद्य भाषा बोलवी ते 'भाषा समिति', (३) वस्त्र
पात्रादिक यत्ना सहित (with caution) लेवा—
मुकवां ते 'आदाण भंडमत्त निखेवणा समिति ;(४)९(
दोष टाळी निर्दोष आहार लेवो ते 'एषणा समिति'
अने (५) वडीनीति—लघुनीति (झाडो—पेशाब
आदि बहार परठवानी (फेंकी देवानी) चीजो का
ई जीवने कीलामना (दुःख) न उपजे एवी रीते
परठवी ते 'उच्चार पासवण खेलजल्ल संघाण परिठ
वणिया समिति

ण गुप्ति'* आदि शुद्ध क्रियाओ करे.

'रोचक' समकिती जीव चोथे 'गुणस्थाने' होय अने 'कारक' समकिती जीव छठे-सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) "दीपक समकित":—दीवो बीजा उपर प्रकाश नाखे पण पोतानी तळे तो अंधारुं ज रहे तेम, 'दुर्भवी'+ अने 'अभवी' जीवो

---

* ३ गुप्तिः—मन—वचन—काया ए त्रणने पापथी गोपाववा अर्थात् पाप क्रियामा न प्रवर्त्ताववा ते.

+ घणा भव भ्रमण करवा छता पण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुशीवते पण मोक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटली दवा लगावो तो पण वाळ नहिज ऊगवाना.)

अन्यमनोने प्रतिबोधी मोक्षनां साधनो बतावे पण पोताने 'गढीमद' थाय नहि, संयम ल द्रव्यक्रिया करे पण अंतर कोरुं ज रहे; एवा पुरुषनुं समकित ते "दीपक समकित" गणाय छे "अमे तो परमेश्वरने खोळे बेठेला छीए" एवुं समजनारा शुद्ध जैन वर्गना ज केटलाक साधुओ—सफेद वस्त्रवाळा, पीळा वस्त्रवाळा तेमज दिगम्बरपंथवाळा साधुओ—पण 'दीपक समकिती' होय छे

—•—

प्रकरण ४ थुं.

पचीस'दृष्टि' ('पचीस बोल')

The Twenty Five Points Of View.

एक चीज उपर जेम वधारे दिशामां-
थी दृष्टि पडे तेम ते चीज वधारे स्पष्ट दे-
खाय;तेम ते चीजनुं वधारे तादृश्य ज्ञान था-
य.जैन तत्त्वज्ञान दरेक बाबत उपर २५ दृ-
ष्टिथी-२५दिशाथी-२५ आंखोथी नजर फें-
के छे अने जो दरेक देशना अने दरेक जमा-
नाना महापंडीतोए पण जैन सिद्धांतोने उ-

धम तरीके स्विकार्यो तेनुं कांइ कारण हाय
तो ते तेनी विशाळ दृष्टि ए ज छे
ए 'पचीस दृष्टि' ने जैनो घणुंखरुं 'पची
स बोल' ए नामथी ओळखे छे पण तेनो
सत्यार्थ 'पचीस दृष्टि' ए शब्दथी सारो समजा
य छे अने ए पचीस संबंधी संक्षिप्त विवेचन
करवामां आवशे, तो पण बारीक समजुती
माटे तो कोइ विद्वान साधुजी पासेथी सांभ-
ळवा दरेक भव्य जीवने भलामण करवामां
आवे छे कारण के ए 'पचीस बोल' धर्म
संबंधी तेमज व्यवहार संबंधी दरेक बाबत
उपर लागु पाडी शकाय छे अने ए वडे व्य
वहारकुशळ थवाय छे भूमितिशास्त्रना सि
द्धांतो लागु पाडीने नवां सिद्धांतो(Dedu-

otions) ऊभां करवा जेवुं आ काम छे; तेथी बुद्धि खीले छे, परिपक्व विचारथी काम थ-वाथी पस्तावुं पडतुं नथी अने धर्म उपर शुद्ध श्रद्धा आवती जाय छे.

ए 'पचीस दृष्टि' अथवा 'पचीस बोल' नीचे प्रमाणे छेः—

(१–२) 'निश्चय' अने 'व्यवहार'.

(३–४) 'द्रव्य' अने 'भाव'.

(५–६) 'विशेष' अने 'अविशेष'.

(७–८–९–१०) 'नाम निक्षेप', 'स्थापना निक्षेप', 'द्रव्य निक्षेप' अने 'भाव निक्षेप'.

(११–१२–१३–१४) 'द्रव्य', 'क्षेत्र', 'काळ' अने 'भाव'.

(१५—१६—१७—१८)'प्रत्यक्ष प्रमाण', 'अनुमान प्रमाण', 'उपमा प्रमाण' अने 'आगम प्रमाण'

(१९—२०—२१—२२—२३—२४—२५) 'नैगमनय', 'संग्रह नय', 'व्यवहार नय' 'ऋजुसूत्र नय', 'शब्द नय', 'समभिरूढ नय' अने 'एवंभूत नय'

ए पचीस, दृष्टांत सहित, नीचे समजाव्या छे

(१—२) 'निश्चय' अने 'व्यवहार'

निश्चयथी—पुस्तक छपाववाथी ज्ञानो प्रसार थाय अने ते कारणने लइने 'ज्ञाना वरणीय' कर्म तूटे.

व्यवहारथी—पुस्तक छपाववामां भय र्स्या पछी पुण्य—पाप बन्नेनी क्रिया लागे

दरेक कार्यमां 'व्यवहार' ते योगनो व्यापार छे; माटे शुभाशुभ बन्ने क्रिया तो लागे ज (श्री 'ठाणांग सूत्र'मां कहेवा प्रमाणे). परन्तु केटलांक कार्यमां तो 'निश्चय'थी ज नुकशान होय छे (जेमके चोरी करवामां).

(३–४) 'द्रव्य' अने 'भाव'

दृष्टांतः—'द्रव्य' वींटी एटले वींटीनो आकार मात्र होय ते; 'भाव' वींटी एटले आंगळीए पहेरवाना काममां आवे ते.

(५–६) 'विशेष' अने 'अविशेष'.

दृष्टांतः—'अविशेष' ज्ञान एटले समुच्चय ज्ञान अथवा ज्ञानना कांइ भेद व-

ताम्या सिवाय यायामांरे 'ज्ञान' कहु ते 'विशेष' ज्ञान एटले ज्ञाननो कोइ न मुक भेद—पेटाभाग कहेवो ते; जेमके 'के वळ ज्ञान' अथवा 'मतिज्ञान' विगेरे.

(७–८–९–१०) चार 'निक्षेप'*

आ चार 'निक्षेप' जैन मतमां उप योगी भाग भजवे छे पनी गेरसमजथी निरांरभी जैनवर्गमां एक मूर्तिपूजक पंथ

---

* क्षिप्=फेंकवुं नि+क्षिप्=आपवुं, आरो पवुं निक्षेप=आरोपवुं ते अथवा आरोहण Act of attributing or ascribing attri bution. कोइ चीजमां बीजी चीजनो गुण आ रोपवो ते

उभो थयो छे के जे, मूर्तिपूजा के जेमां हिंसा मुख्यत्वे छे अने धर्म के जेमां जीवदया मुख्यत्वे छे ते बेनो परस्परविरोध पण-जोवानी दरकार करतो नथी.

अत्रे आपणे *'अरिहंत' अने 'सूत्र' ए बे शब्द उपर आ चार 'निक्षेप' उतारीशुं अर्थात् लागु पाडीशुंः—

---

* दुनियामा जेटली चीज छे तेटली बधी कबुल करवा छता पूजवा योग्य होइ शके नहि. तेमज 'निक्षेप' चार छे ते चारने पूजे तो ज 'निक्षेप' चार कबुल राख्या एम साबीत थतुं नथी. मूर्तिने माननारा तेमज नहि माननारा एकंदर जैनो कहे छे के, केटलीक चीजो 'ज्ञेय' एटले जाणवा योग्य छे, केटलीक 'उपादेय' ए-

अरिहंत

१ "नामनिक्षेप":—कोइ जीव अगर अजीव वस्तुनुं 'अरिहंत' एवुं नाम आप्युं होय त्यारे ते जीव अथवा वस्तु 'नाम निक्षेप'ना आधारे 'अरिहंत' कहेवाय भरवाडना छोकरानुं नाम 'इन्द्र' पाडे तो ते छोकरो इन्द्र न होवा छतां 'नाम निक्षेपे' इन्द्र' कहेवाय

एटले आदरवा योग्य छे अने केटलीक 'हेय' एटले तजवा योग्य छे माटे 'निक्षेप' एक ज नहि पण चार छे एम कबुल राखनार माणसे 'स्थापना निक्षेप' ने 'उपादेय' तरीके ज कबुल राखवो जोइए एवुं कहेनारा माथ पोताने ज ठगे छे

२. "स्थापना निक्षेप":— तेना बे भेद छेः (१) 'सद्भाव स्थापना' अने (२) 'असद्भाव स्थापना'

(१) 'सद्भाव स्थापना' ते तादृश्य रुप; जेमके फोटोग्राफ, बावलुं इत्यादि. 'अरिहंत'नी 'सद्भाव स्थापना' त्यारे ज कहेवाय के जो भगवान देहधारी हता ते वखतनी तेमनी आबेहुब छवी अगर बावलुं बनावी राख्युं होय तो.

(२) 'असद्भाव स्थापना' ते १० प्रकारे कराय छेः—चोखा;कोडा-संखछीप; गंठीने बनावे ते; परोवीने बनावे ते; जोडीने बनावे ते; घींटीने बनावे ते; लीपी-

मे बनावे छे; चीतरीने बनावे छे; काष्ठ;
कपडुं; एम १० प्रकारे कराय छे ' अरि
हंत' प्रभुनो फोटोग्राफ (छबी) अगर बावलुं
न बनावायी* तेने बदले पोथा–कोरा–

---

* छोको ज्यारे हरकोइ युक्तियी मूर्तिने आ
गळ करवा मागे छे तो पछी, आ एक आश्चर्य
पावा छे के, तेओ ' सद्भाव स्थापना ' छोडी
ने ' असद्भाव स्थापना ' केम करे छे ? जेनुं
नाम ज 'असद्' एटले 'खोटुं' तेने ग्रहण क
रवुं ए शुं विचारशक्ति पामेला मनुष्य प्राणीने
शोभती वात छे ? श्री महावीरस्वामीनुं पुतळुं
बावलुं एवुं तो आबेहुब बनाववामां आव्युं ह
तुं के विदेशी राजाओ तेने भेटवा तलपी रह्या
हता जो मूर्तिपूजा ए रुडुं काम होत तो महा

काष्ट–पाषाण आदि वडे आकार मात्र मा-
णसने मळतो वनावी तेमां महावीरपणुं आ-

नाथ तीर्थंकरनी ए आवेहुव मूर्ति केम साचवी
न राखवामा आवत ? वळी मात्र अंगुठो जोइने
आखा शरीरनी आवेहुव छबी वनावनार कारी-
गरो पण ह्याती धरावबा छता कोइपण तीर्थं-
करनी छबी के बावलुं केम न वन्युं ए सम-
जातुं नथी भगवान तो जाणता हता ज के अ-
मारा पाछळ वखत आवो आववानो छे; वळी
ते भविष्य काळनुं वर्णन पण करी बतावता;
तो शुं कोइ समकिती—भक्तिवंत श्रीमंतो ते
वखतमा न्होता के जेओ भविष्यना करोडो
जीवोना हितार्थे ह्यात भगवाननी छबीं अने
बावला बनावी राखे ? एम थयु होत तो आजे

रोपे एटले के तेने 'महावीर' तरीके माने—पूजे ए 'चरित्र'नो 'असद्भाव स्थाप ना निक्षेप'

'असद्भाव स्थापना'मां कोइने मुंझाइ रहेवुं पडतुं नहि

वळी आ पण विचारवा जेवुं छे के, 'सद्भाव' अने 'असद्भाव' स्थापना ते, रूपवंत वस्तुनी ज होइ शके पण कोइ भाव–गुण(abstract)नी होइ शके नहि जे भगवानने स्थापवानुं आपणे कहीए छीए ते भगवान कोइ पुद्गलीनी रचनामयी, पण अदृश्य आत्मा—तीर्थंकर उपरनो प्रेम दूर करी 'निमरूप मां मग्न थयेलो आत्मा ज छे तेना गुण जे ज्ञान–दर्शन चारित्र ते तो अदृश्य छे; तेनी स्थापना शी रीते करी शकाय ?—रूपागार

२. "द्रव्य निक्षेप" -तेना ५ भेद छेः- (१) 'जाणग शरीर द्रव्य'; (२) 'भवीय शरीर द्रव्य'; (३) 'लौकिक द्रव्य';(४) 'कुमावचनीक द्रव्य' अने (५) 'लोकोत्तर द्रव्य'

(१) 'अरिहंत' मोक्ष सिधाव्या अने तेमनुं शरीर पडयुं होय ते शरीरने 'जाणग शरीर द्रव्य निक्षेप'ना आधारे 'अरिहंत' कहे

(२) 'अरिहंत' प्रभुए दीक्षा लीधी न होय ते वखते एटले के घरवासमां होय त्यारे 'आ तो अरिहंत थवाना छे' एम विचारीने तेमने 'अरिहंत' कहे, ते 'भवीय शरीर द्रव्य निक्षेप' ना आधारे कहुं

(३) लोकने विपे, धर्मने जीते तेओने एटले चक्री-वासुदेव-राजा विगेरने 'लोकिक द्रव्य निक्षेप'नी दृष्टिए अरिहंत' कहे

(४) अरिहंत मभुमां जे ' चोत्रीस अतिशय' छे ते जे देवमां न होय एवा हरि, हर,ब्रह्मा आदि देवने 'कुमावचनिक द्रव्य निक्षेप 'नी दृष्टिए ' अरिहंत ' कहे

(५) कोइ मनुष्य जैन धर्ममां होय, पण 'केवळ ज्ञान' पाम्यो न होय; छतां पोताने ' अरिहंत ' कहेवरावे ते ' लोकोत्तर द्रव्य अरिहंत' ('गोसाळा'ना ए दृष्टांत)

४ " भाव निक्षेप ":—केवळज्ञान आदि सहित जे वर्ते छे ते 'भाव अरिहंत' खरेखरा अरिहंत तो ते ज; अने वंदनीक

पण ते ज. वाकी तो 'अरिहंत' नामनो माणस के पथ्थर कोइनुं कल्याण करी शके नहि.

सूत्र.

१. नाम निक्षेपः—कोइ पण प्राणि पदार्थनुं 'सूत्र' एवुं नाम.

२. स्थापना निक्षेपः—सूत्र तरीके कागळ मुकी तेने सूत्र माने.

३. द्रव्य निक्षेपः—लखेलां पानां Concrete thing)

४. भाव निक्षेपः—सूत्रमांनां तत्वो (वांचनार जे ग्रहण करे छे ते) (Abstract preachings of the Scriptures)

श्री 'अनुयोगद्वार' सूत्रमां कह्युं छे के, पहेला त्रण 'निक्षेप' 'अवस्तु' एटले उपयोग विनाना छे; छेल्लो चोथो ज आ लोकमां उपयोगी अने परमार्थमां साधन रुप छे जेमके 'गुमास्तो' ए नाम पोकारवाथी दुकाननुं काम थशे नहि; तेमज गुमास्तो पासे हाजर रहे पण काम न करे अगर दुकान चलाववानी शक्ति तेनामां न होय तो पण ते नकामो छे गुमास्ता तरीके फरमानां काम जाणनारो अने जाणवा प्रमाणे करनारो गुमास्तो एज कामनो छे गुमास्तानो 'गुण' अथवा 'भाव' जे दुकाननो वहीवट, ते ज उपयोगी छे एवनी मायनमां पण एमज समजवुं

सूचना १ लीः—' लोगस्स 'मां जे तीर्थंकरोनां नाम छे ते तीर्थंकरनो ' नाम निक्षेप ' न कहेवाय पण ' नाम संज्ञा ' कहेवाय तीर्थंकरनुं नाम अन्य कोइने आपीए त्यारे ते ' नाम निक्षेप ' कहेवाय.

सूचना २ जीः—खुद तीर्थंकर वीराजता त्यारे नाम तो हाल छे तेज धरावता पण ते ' नाम निक्षेप ' कहेवाय नहि; ' भाव निक्षेप ' कहेवाय.

सूचना ३ जीः—' मोहन घर 'मां श्री मल्लीनाथे पोतानुं आबेहुब सुवर्ण वावलुं मुक्युं हतुं, के जेना कारणथी छ राजाने ' जाति स्मरण ' ज्ञान उपन्युं हतुं;तो

पण ए छ समकिती जीवोए वापराने मां
टुं नहि—मो क्ष प्रत्ये तो ते उपकारी पदा-
र्थ-कारणभूत पदार्थ हतो अने वळी ती
र्थकरनी 'सद्भाव स्थापना' हती नमी
राज मुनीना कारणथी बुज्या हता पण
मुनीने तेमणे पुजी नहोती समुद्रपाळ रा
आ चोरने देखीने बुज्या हतां पण कांइ
चोरने तेणे वांद्यो—पूज्यो नहोतो माटे 'भ
गवाननी मूर्त्ति देखवाथी भगवान याद आ
वे छे, ते कारणथी मूर्त्ति पूजवी जोइए' ए
दलील तद्दन पाया वगरनी छे अने जीन
प्रतिमा माननारा 'जीन प्रतिमा जीन सा
रिसी' कहे छे पण द्रव्य के भाव एकपण
रीते ते जीन सारिखी थइ शकती नथी, भ

गवान देहधारी हता ते वखतनी छवी के दाबलुं होत तो कदाच द्रव्ये 'सारिखी' कही शकात. वळी भगवानने ज्ञान गुण अने मूर्तिनो जड गुण: ते पण एक 'सारिखी' कहेनारे विचारवा जेवुं छे

आ तो धर्ममां आगळ वधवानी तीव्र इच्छाने लीधे उन्मार्गे चडी जवा जेवुं थयुं विद्वान अंग्रेज 'एडिसन' एक सादुं सत्य कहे छे के, "Idolatry may be looked upon as *another* error arising from *mistaken* devotion" अर्थात् "मूर्तिपूजा ए भक्तिनो अर्थ भूलवाथी थती एक वीजी भूल गणवी जोइए "

वैराग्य उपजवानुं के ज्ञान थवानुं तो

क्षयोपसम उपर आधार राखे छे शुद्ध महा-
वीर स्वामीना मुख्य शिष्य गौतम स्वामी
जेवा तेमणे मात्र तीर्थंकरनी भक्ति करी तो
पण महावीर स्वामीनी उपाधि सुधी तो ते-
मने ' केवलज्ञान ' न थयु अने तेमनो वि
योग थ ता गौतम स्वामीने एक टुंका वखत
मां ' केवळ ज्ञान' उपजावनारो थइ पड्यो
साक्षात् वीतराग देव वीरागता त्यारे ते
मने वांदवा कोइए तप कराव्या नहोता
श्री ' विपाक' सूत्र तथा श्री 'भगवती' सू
त्रमां कह्युं छे के, सुबाहुकुमारे तथा उदा
इ राजाए एम भावना भावी के ' भगवं
त जो अहीं पधारे तो तेमने वांदी हुं कृ
तार्थ थाउ ' ' एटलो तीव्र भक्तिभाव छतां

अने खुद भगवानना दर्शन थवानां हतां छतां, तेमज पोते लक्ष्मीवान होवा छतां, संघ काढीने वांदवा गया नहोता, तो पछी पथ्थरने भगवान मानी लइ तेने वांदवा माटे संघ काढीने जवुं एमां शुं भगवाननी आज्ञा होय ? अरेरे ! भष्मग्रहना भ्रमीत आचार्योए मात्र पेटना कारणे, दुधमांथी पोरा वीणवा जेवुं काम करी, ' स्थापना निक्षेप ' नो अवळो अर्थ लेइ मूर्तिपूजाना अने ते अंगे थतां वीजां अगणित पापोमां भोळी दुनियाने केवी डूबावी दीधी छे! असे डूबेला पाछा उठवा ज न पामे तेटला माटे तेमना उपर कपोळकल्पित ग्रंथोनी केवी त्रासदायक पछेडी ओढाडी दीधी

छे। एक परपिपन पदीस कहेतो के, मारा प
क्षमां मारा जेवा मात्र २-४ पीमां नर आपो
तो 'प्रकाशनु कारण सूर्य नथी' एम दुनि
याने समजावी देवामां मने काई मुश्केली
नथी ! खरे, " सामग विपरीता राक्षसा
भवन्ति " * ज्यारे २-४ पदीसो आटली
अविद्या फेलावी शके छे त्यारे मस्मग्रहना
तस्थापप भूसवी आकूळ व्याकूळ थयेला
आचार्यो शासनु धम पनावी दे परे दु
नियानो शिकार करवामां फतेह पामे ए

* 'साक्षरा' ए शब्दने उलटावी वांचीए तो
'राक्षसा' थाय छे. तेमज 'साक्षरा' एटले पंडीत
जनो 'विपरीता' एटले आडा फाटेत्यारे 'राक्षस'
जेवा बने छे

मां शुं आश्चर्य ! परन्तु जेओने अंतर्चक्षु छे तेमने विचार करवा दो अने पापखाड़मां धकेली देनार सामे मानासिक टक्कर लेवा दो.

(११–१२–१३–१४)

'द्रव्य'–'क्षेत्र'–'काळ' अने 'भाव'

—कइ रकमनो अमुक पदार्थ छे अथवा कइ जातनुं काम करवानुं छे ते विचारवुं ते 'द्रव्य'थी विचार कर्यो कहेवाय; कया देशनो पदार्थ छे अगर कया देशमां अमुक काम करवानुं छे ते विचारवुं ते 'क्षेत्र'थी विचार कर्यो कहेवाय; केवा वखतमां बनेली वस्तु छे अगर केवा जमानामां—केवा प्रसंग (occassion) मां

अमुक काम करवानुं छे ते विचारवुं ते 'काम' नो विचार कर्यो कहेवाय; अने अमुकथी अथवा कार्यथी शुं लाभालाभ-शुं परिणाम थशे ए विचारवुं ते 'भाव'नो विचार कर्यो कहेवाय

स्पष्टीकरणः—एक माणस जापानमां कापडनो वेपार करवा जवा तैयार थया तेणे (१) द्रव्यथी विचार्युं के, कापडनो वेपार केवो कहेवाय ! (२) क्षेत्रथी विचार्युं के जापान देशमां कापडना वेपार माटे केवुं क्षेत्र (field)छे—स्पर्धा केवी छे—खपत केवी छे ! (३) 'काळ'थी विचार कर्यो के, हमणां वेपार करवाथी फाविया जापाननी लडाइना कारणथी काइ एकत्व

तो नहि पडे ? (४) भावथी विचार कर्यो के आ वेपार एकंदरे लाभकारक थाय तेम छे के केम ?

(१५-१६-१७-१८) 'प्रत्यक्ष,' 'अनुमान,' 'उपमा' अने 'आगम' प्रमाण.

(१) आंखथी रूप जाणवुं, कानथी शब्द जाणवो, नाकथी वास जाणवी, जीभथी रस जाणवो. त्वचाथी फरस जाणवो; ए "प्रत्यक्ष प्रमाण."; जेमके सूर्यनुं किरण जोइने कहे के सूर्य उग्यो.

(२) अनुमान अथवा कल्पनाथी धारवुं ते "अनुमान प्रमाण". जेमके कोइ पुरुषने भींतना अंतरे 'चौद पुर्व' नो अभ्यास करतां सांभळीए ते उपरथी

अनुमान करीए के ते मुनीराज होवा जोइए; वरसादनी टंडी हवा अने खास गं- ध आववाथी अनुमान करीए के १६ कोश- नी अंदरमां क्यांइक वरसाद पडे छे; ए सर्व "अनुमान प्रमाण"

(३) 'तळाव समुद्र जेवु छे','पाणी अ- मृत जेवुं छे', छास दुध जेवी छे; ए "उ- पमा प्रमाण"

(४) शास्त्रनां प्रमाण (साक्षी) ते "आ- गम प्रमाण"; जेमके सूर्य भूमिनथी ८०० योजन उंचो छे, प्रत्यक्ष ५२ १६ योजन नो छे, जंबुद्वीप लाख योजननो छे अढी द्वीप ४५ लाख योजननो छे, तेमां १३२ चंद्र अने १३२ सूर्य छे; ए सर्व "आगम

प्रमाण." तेमां पण २ भेद् छेः—

'लौकिक आगम प्रमाण' अने 'लोकोत्तर आगम प्रमाण' "त्रिकोणना त्रण खुणा मळीने बे काटखुणानी बराबर छे" एवुं कहेवुं ते भूमिति शास्त्र के जे लौकिक शास्त्र छे तेनुं प्रमाण कहेवाय. "समकित विना मोक्ष नथी" एम कहेवुं ते जैनसूत्रनुं वाक्य छे अने जैन सूत्रने 'लोकोत्तर शास्त्र कहेवाय छे माटे ए वाक्य "लोकोत्तर आगम प्रमाण" कहेवाय

(१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५)

सात नय.

१. "नैगम नय",—अंशग्राहीपणुं;

जेमके — समद्रष्टि जीवने सिद्ध मान्यो, अथवा चौदमा गुणस्थाने वर्तता साधुने संसारी कहेवो ते 'नैगम नय' नी मान्य ता वाळानुं काम छे श्रावक दयाळु होय ए सिद्धांत उपरथी, कोइ स्त्रीसीमां भरा यणा जोइने तेने 'नैगमनय'वाळो श्रावक करे छुगडुं वणवा मांड्युं, एमीं एक ज तार नाख्यो तेने 'नैगमनय' ना आधारे कहे के ' छुगडुं वण्युं ' एवीज री- ते छुगडुं वणाइ रहेवा आव्युं होय मात्र एकज तार बाकी होय तेने ' नैगम नय' वाळो कहे के छुगडुं वण्युं नथी '

२ "संग्रहनय":- संग्रह—समुच्चयथी बोलवुं ते; जेमके—दश मण सामायिक

करता होय तेने 'संग्रहनय' वाळो एक ज सामायिक कहे तेमज, घणा जणाना रूपिया एकठा करी दानशाळा मांडी होय पण 'संग्रहनय' दृष्टिवाळो कहे के एक ज दातार छे.

३ "व्यवहार नय"--'नैगम' अने 'व्यवहार' नयमां भिन्नता एटली ज छे के, कोइ माणस सामायिक करवा घेरथी नीकळे तेनी पासे पथरणुं जोइने 'नैगमनय'नी दृष्टिवाळो कहे के आ सामायिकवाळो पुरुष छे; अने 'व्यवहारनय नी दृष्टिवाळा तो ते माणसने सामायिकना पाठना उच्चार करतां सांभळे त्यारे ज एम कहे वन्ने बाह्य चेष्टा उपरथी ज विचार बांधे छे,

जेमके— समद्रष्टि जीवने सिद्ध मानवो, अथवा चौदमा गुणस्थाने वर्तता मानुन संसारी कहेवो ते 'नैगम नय' नी मान्य ता वाळानुं काम छे श्रावक दयाळु होय ए सिद्धांत उपरथी, कोइ व्यक्तिमां जरा दया जोइने तेने 'नैगमनय'वाळो माणस श्रावक कहे लुगडुं अथवा मोडपुं, एमां एक ज तार नाख्यो तेने 'नैगमनय' ना आधारे कहे के 'लुगडुं वण्यु' एवीज री ते लुगडुं वणाइ रहेवा आव्युं होय मात्र एकज तार बाकी होय तेने 'नैगम नय' वाळो कहे के लुगडुं वण्युं नथी'

२. "संग्रहनय":- संग्रह—समुच्चयथी बोलवुं ते; जेमके:—दश जण सामायिक

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां बेठा होय त्यारे, ए गुणने लइने, तेने शब्दनयनी दृष्टिवाळो माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावे; पण ज्यारे इन्द्र शत्रुने जीतवामां होय त्यारे, ए गुणने लइने,'पुरंदर' शब्दथी बोलावे;तेमज वळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय त्यारे, ते गुणने लइने, 'शचीपति' शब्दथी बोलावे शब्दनयवाळानी दृष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समभिरूढ'नयनी दृष्टिवाळो माणस गुण अने लिंग जोइने वात करे. जेमके साडी, अंगवस्त्र, कपडुं, साडलो ए विगेरे नाम एक ज चीजनां छे.पण ते चीज स्त्रीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

पण वात घेप्वामां पण ' नैगमनय ' दृष्टि ध्यान्न करतां ' व्यवहारनय ' दृष्टिवाळो माणस वधारे सार्थी करे छे ।

४ " ऋजुसूत्रनय ":—आ दृष्टिवाळो माणस वर्तमान काळनीज वात माने

दृष्टांत—कोइ माणस समायिकमां होय पण तेनु मन वेपारमां दोडतु होय तो ऋजुसूत्र'नयवाळो एज वखत ध्यान करतो कहेके, "अमुक माणस वेपारमां छे—वेपारी छे"

५ ६ ७ " शब्दनय ", "समभिरूढ नय " अने " एवभूत नय "

ए त्रण नयवाळा माणस नाम, द्रव्य अने स्थापना निक्षेपने अवस्तु (असत्य) मानछ

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां बेठा होय त्यारे, ए गुणने लइने, तेने शब्दनयनी दृष्टिवाळो माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावे; पण ज्यारे इन्द्र शत्रुने जीतवामां होय त्यारे, ए गुणने लइने,'पुरंदर' शब्दथी बोलावे;तेमज वळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय त्यारे, ते गुणने लइने, 'शुचीपति' शब्दथी बोलावे शब्दनयवाळानी दृष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समभिरूढ'नयनी दृष्टिवाळो माणस गुण अने लिंग जोइने वात करे. जेमके साडी, अंगवस्त्र, कपडुं, साडलो ए विगेरे नामएक ज चीजनां छे.पण ते चीजस्त्रीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

छे. हवे आपणे ए 'पचीस दृष्टि' 'ज्ञान' उपर लगाडीशुं.

ज्ञान.

(१) निश्चय ज्ञान—सम्यक्त्व सहित अंतरंग (अभ्यंतर) भावे यथातथ्य जीवादिकनु 'जाणपणुं' ते 'निश्चयज्ञान'.

(२) व्यवहार ज्ञान—गुण सहित पदार्थनुं यथातथ्य 'प्रकाशवुं' ते 'शुद्धभाव व्यवहार ज्ञान'.

(३) द्रव्य ज्ञान—विना समकित, शुद्ध सर्दहणा रहित, मिथ्यात्वीनु जे ज्ञान ते 'द्रव्यज्ञान'; तेमज, आ लोकमां कीर्त्ति मळवा अर्थे ज्ञान भणवुं ते पण 'द्रव्यज्ञान'.

(४) भावज्ञान—जीन आज्ञा अने शुद्ध सर्दहणा सहित एकांत निर्जराने अर्थे ज्ञान

मणवुं ते 'भावज्ञान'

(५) अनिक्षेप ज्ञान-समुच्चये ज्ञा
(खास विभाग बनाव्या शिवाय)

(६) निक्षेप ज्ञान--ज्ञानना भाग-
विभागादिनुं खास जाणपणुं

(७) नामनिक्षेप ज्ञान—कोइ भा
अगर पदार्थने 'ज्ञान' एवुं नाम आपवुं ते

(८) स्थापना निक्षेप ज्ञान—ज्ञानने
स्थापना करवी ते

(९) द्रव्य निक्षेपे ज्ञान—लखेलां पुस्त
पानां

(१०) भाव निक्षेप ज्ञान-मननुं तत्त्व ते

(११) द्रव्यज्ञान-षड्द्रव्यनुं यथार्थ

---

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय
३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५

स्वरूप जाणवुं तथा परुपवुं ते

(१२) क्षेत्र ज्ञान—सर्व क्षेत्रनुं (अर्थात् चौदराजलोक''नुं) यथातथ्य स्वरूप जाणवुं ते क्षेत्रज्ञान (एमां भूगोळ-खगोळादिनो समावेश थाय छे)

(१३) काळ ज्ञान—वर्तमान, भूत, भविष्य ए त्रण काळ संबंधी ज्ञान [अमुक ऋतुमां अमुक बनाव बने, लडाइना काळमां अने दुष्काळमां अमुक बनाव बने, भूतकाळमां आम बन्युं हतुं माटे भविष्यमा आम बनशे, विगेरे प्रकारनु ज्ञान]

जीवास्तिकाय, ६ काळद्रव्य. ए 'षड्द्रव्य' Matter, Motion, Attraction विगेरे सर्वेनी समजुती आ षट्द्रव्यना विस्तारमां आवे.

(२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः—
ांच प्रकारनुं ज्ञान छे तोपण समुच्चये एक
। ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः—
ाह्य ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ डोळ-
ालु साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण–
कुराननां अशुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा
ाटकना रागोटा संभळावे त्यारे 'व्यवहार'-
ी दृष्टिवाळी प्रषदा तेने ज्ञानी माने

(२२) ऋजुसूत्रनय प्रमाणे ज्ञान—
ज्ञान पांच प्रकारनु छे;जे पैकी,छद्मस्थने चार
ज्ञान होय परन्तु'ऋजुसूत्र'नय वाळो माणस,
वात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी
'सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(१४) मापज्ञान—सर्व मापनुं ज्ञान

(१५-१६-१७-१८) प्रत्यक्ष—अनुमान उपमा अने आगम प्रमाण ज्ञानना ए पाछळ समाइ गया छे

(१९) नैगमनय प्रमाणे ज्ञान—अंशमात्र ज्ञानने पण ज्ञान कहे अने ए रीते मात्र 'नैगमनय' दृष्टिवाळा विचार गाभरीआओ, नवतत्त्व—छकायना बोल के एकाद चोकडी पाठ करनार साधुने के एकाद अंग्रेजी चोपडी भणनार संसारीने 'ज्ञानी' कहे छे; कारण के तेओ अणुद्धि होवाथी अल्पज्ञानने ज्ञान माने छे

मनीषना माव—धर्म, पण एस फरस औषमो माव 'उपयोग' परख के ज्ञान दर्शन चारित्र तप, वीर्य, सुख—दुःख

(२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः—
पांच प्रकारनुं ज्ञान छे तोपण समुच्चये एक
त ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः—
बाह्य ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ डोळ-
घालु साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण-
कुराननां अशुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा
नाटकना रागोटा संभळावे त्यारे 'व्यवहार'-
नी दृष्टिवाळी प्रषदा तेने ज्ञानी माने.

(२२) ऋजुसूत्रनय प्रमाणे ज्ञान—
ज्ञान पांच प्रकारनुं छे;जे पैकी,छद्मस्थने चार
ज्ञान होय परन्तु 'ऋजुसूत्र' नय वाळो माणस,
वात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी
सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(२३) अकस्तूग प्रमाण ज्ञान—सम्यक्त्व सहित ९ तत्वनु ज्ञान ते

(२४) समभिरूढनय प्रमाणे ज्ञान सम्यक्त्व सहित ज्ञान होय अने परगुणथ विरक्तपणु होय तेवा ज ज्ञानने आ नयवाळ ज्ञान माने

(२५) एवंभूतनय प्रमाणे ज्ञान—केवळ ज्ञानने ज ज्ञान कहेवाय

प्रकरण ५ मुं

सम्यक्त्वना ६७ बोल.

सम्यक्त्व शुं चीज छे अने तेना भेद केटला छे ते विगेरे आपणे जोइ गया हवे आपणे समकिती जीवना लक्षण शु, ते शु शु करे छे अने शुं शु नथी करतो, कइ कइ जातना अल्प दोषो तेने माथे झझुमी रह्या छे, इत्यादि विचार करीशु

चार सद्दहणा.

[१] " परमार्थ संस्तव —समकि-

वी जीव होय ते नवतत्त्वादिनो परमा (यथातथ्य ज्ञान) जाणवानो उद्यम करे

[२] "परमार्थ ज्ञातसेवन":- समकिती जीव होय ते परमार्थ जाणना पुरुषनी सेवाभक्ति करे

[३] "व्यापन्नदर्शनवर्जन":- समकिती जीव होय ते समकित पाम्या प छी पडेला अर्थात् पतेला (पडवाइ) ने सोबतथी दूर रहे

[४] "कुदर्शन वर्जन -सम किती जीव होय ते वीतराग मार्ग सिवायना बीजा मार्गोनो (निकट) सहवास वर्जे; अ थात् अन्यधर्मना सिद्धांतो—स्थानको विगेरे

नो विशेष सहवास न राखे *

* दरेक धर्मना लोकोमां आवी एक साची-न्यायवंत सलाहने ताणीखेंची, मारीमचरडी उंधो अर्थ लेवानो रीवाज छे. ब्राह्मणो कहे छे के, "एक तरफ भयकर अग्नि होय, बीजी तरफ उची दीवाल होय, त्रीजी तरफ मदमस्त हाथी आवतो होय अने चोथी तरफ श्रावकनो अपासरो होय तो हाथी के अग्निनी दीसा तरफ जवु बहेतर छे, पण अपासराना पगथीआना स्पर्शथी पगने अपवित्र न करवा." बीजा धर्मोवाळा कहे छे के, 'अमुक धर्मनो उपदेश थतो होय त्या थइने जवुं पडे तो कानमां आंगळी नाखवी!' अने जैनो पण अन्य धर्मो माटे एम ज बोले छे, एटलुं ज नहि पण आवां शास्त्रवचनोने मारी मचरडी उंधो अर्थ करी तेने पुरावा तरीके रजु करे छे. पण मारा समजवा प्रमाणे ए पक्षा-

मकिती जीवने धर्मोपदेश—शास्त्रनपनो सां मळवानी रुचि होय

(२) "धर्मराग"—गुवान—सुदर चतुर भने सुखी पुरुपने एवी ज कुमारिका तरफ जेवो राग होय एटलो राग समकिती जीवने धर्म विषे(धर्म आदरवाने विष) होय

(३) "वैयावृत्य"—समकिती जीव देव—गुरुनी सेवाभक्तिमां प्रमाद न करे

दश विनय

समकिती जीव अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय स्थविर,* कुल अथवा एक

* स्थविर ३ प्रकारना छे—(१) ६ वर्षनी उपरना साधु ते 'वयस्थविर' (२)

गुरुना शिष्यो, गण अथवा घणा आचार्योना शिष्यो, संघ, साधर्मी*तथा क्रियावंत : ए १० नो विनय करे.

विनय चार रीते थायः— बहु भक्तिभाव बतावबाथी, कीर्ति करवाथी, मान देवाथी अने त्रीस प्रकारनी आसातना टाळवाथी.

त्रण शुद्धि ^१

समकिती जीव होय ते मन—वचन—काया, ए त्रण योगने शुद्ध प्रवर्तावे.

---

२० वरसनीदीक्षावाळा साधुते 'प्रव्रज्यास्थिवर' (३) ठाणागजी—समवायांगजी जाणनारा ते ' सूत्रस्थिवर '.

*साधर्मीनो विनय एटले श्रावक,श्रावकनो विनय करे; साधु, साधुनो विनय करे.

^१ जरथोस्थी अने क्रीस्नी धर्ममां पण ए३

पाच दुषण रहितपणु.

(१) "शंका":—समकितनी पोताम ज्ञाननी न्यूनताने लीधे वीतराग वाक्यनो परमार्थ न समजी शके तेथी कांई सिद्धांतमां शंका लावे नहि पण शुद्धि कारके अगर समय पुरुषोने पूछी संशयरहित थाय

(२) "कांक्षा" (कंखा).—सम

शुद्धि मनसी ' (Thought) ' वचसी ' (Word) अने कुमसी (Deed) ए त्रण शब्दथी समजावी छे.

आ पांच दुषण अतिचार छे अतिचार ए अनाचार छे. एमां महाव्रतभंग जेटलो दोष नथी

कितीं जीव एम कदी न समजे के अमुक धर्ममां पण देवलोकनी वातो छे अगर चमत्कार छे माटे ते धर्म पण साचो छे; अगर 'सर्व धर्म सरखा' छे एम गोळ-खोळ एक समान गणवानुं काम समकिती जीव न करे.

(३) "विचिकित्सा" (वितिगिच्छा):-समकिती जीव धर्मना फलनो संदेह न राखे; जेम के, हुं धर्म तो करुं छुं पण तेनुं फळ मने मळशे के ते उद्यम मात्र निष्फळ ज निवडशे? अगर, अमुक माणस घणो धर्मी छे छतां महादुःखी छे तो 'धर्मथी सुख मळे छे' ए वात केम मनाय? एवी रीते समकिती जीव कदी बोले नहि. कारण के आ जीवने पूर्वना भवोमां करेलां कर्मोनां

अन्यतीर्थिक* जनोथी झाझो सहवास

तीर्थिक माणस अत्यन्त प्रशंसा करवा योग्य तो नहि ज. 'होरेस' साचुं कहे छे के -"Commend not till a man is *thoroughly* known A rascal praised you make his *faults* your own." HORACE.

पाछल 'कुदर्शनवर्जन' ए बोल आवी गयो तेमां अन्यधर्मना सिद्धांतो-स्थानको विगेरेना सहवास संबंधी कह्युं अने आ बोलमां ए सिद्धांतोने माननारा अन्यतीर्थिक प्राणीओना सहवास संबंधमां कहे छे. एमा अन्यधर्मी साथे कन्याव्यवहार आदि गाढा संबंधमां न जोडाया भलामण छे.कदाग्रह छोडी विचार करनारने आ सलाहनुं सत्य आपोआपज समजाशे.

'संगत तेवी असर' ए जगजाहेर कहेवत

(२) अरिहंत देव (वर्तमान काळे श्री महाविदेह क्षेत्रे) विचरे छे तेमनी भक्ति करे अर्थात् मन-वचनथी तेमना गुणग्राम करे अने कायाथी नमस्कार करे

(३) साधु-साध्वी तथा साधर्मीनी योग्य *भक्ति करे

अत्रे सहवास ए जाणवुं के लांबा वख-तनी सोबतना अर्थमां समजवो. धंधारोजगार अर्थे, सामाने उपदेश करवा अर्थे आदि हेतुने लइने अन्यतीर्थिकनो परिचय छेक त्याज्य नथी, हमेश हेतु तरफ दृष्टि राखवी.

साधु साध्वीने आहारादि आपे, विगेरे अने साधर्मी श्रावकने जोइने हर्षित थइ मानपान, आदरसत्कार आपे भोजनादिथी प्रसन्न करे काइ कामकाज होय तो पूछे अने पोताथी बने तेम होय तो ते करी आपे, विगेरे.

प तेने ज्ञान वडे अने जरुर पडे तो द्रव्या-
कनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

तेमने शीरापुरी खवरावना माटे नोकारसी,
च्छ, ज्ञाति भोजन आदि करनार जैनो अने
यां जरुर न होय त्यां एक उपर चार बीजां
रां-अपासरा कराववामां या वरघोडा अने
िक्षा प्रसंगमां हजारो रुपीआ खर्चवानां मोटाइ
ानतारा जैनो, जैन शासनने कया' भूषण'-
थी शोभावाय ते जाणता ज नथी,अगर जीव-
दयानु खरुं रुप ज समजता नथी. उपर कहे
ला जूदा जूदा रस्ते जे द्रव्य खरचाय छे
तेमांथी ५० टका बचावी जदा मूकीए तो
पांच वरसमां एवी सारी रकम उभी थाय
के तेमांथी उपर कहेला आश्रमो स्थापी शका-
य अने 'जैन पुस्तकालयो' विगेरे पण स्थापी
शकाय.—प्रकाशक.

(४) धर्मथी अजाण प्राणीने अने प
रदर्शनना अनुयायीओने धर्म समजावे धा-
रमण बेठा होय त्यां युक्तिथी धर्म संबंधी
घात घरे अने सौने धर्मरागी बनावे

(५)धर्म पामेलो माणस धर्मथी डगतो•

•१९५९ ना दुष्काळमां धमाए मुख म
रता लोकोने मुक्तिफोज नामथी ओळखाता
खीस्ती लोकोए मदद आपीने पाताना पंथमां
लीधा हता हव जो ते धर्मना लोकोप त
दीवानां कावादीनी धर्म ओळमारने बदल
सरली सहायता करी होत तो तेमनो मत
बगडत नहि जैन निराश्रीत फंड, जैन
विधवाश्रम जैन अनाथाश्रम' विगेरे ज्यां
सुधी नहि स्थपाय त्यां सुधी हालना जैन
(समुच्चय) आ पांचमा भूषण' वगरना छे
एवो मारोप तेना माथेथी उतरे नहि भ-
क्ष जमने घर अन्नना भंडार भरपुर

होय तेने ज्ञान वडे अने जरुर पडे तो द्रव्या-
दिकनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

छे तेमने शीरापुरी खवराववा माटे नोकारसी,
गच्छ, ज्ञाति भोजन आदि करनार जैनो अने
ज्यां जरुर न होय त्यां एक उपर चार बीजां
देरां-अपासरा करावचामां या वरघोडा अने
दीक्षा प्रसंगमां हजारो रुपीआ खर्चवानां मोटाइ
माननारा जैनो, जैन शाशनने कया 'भूषण'-
थी शोभावाय ते जाणता ज नथी, अगर जीव-
दयानु खरुं रुप ज समजता नथी. उपर कहे
ला जूदा जूदा रस्ते जे द्रव्य खरचाय छे
तेमांथी ५० टका बचावी जुदा मूकीए तो
पांच वरसमां एवी सारी रकम उभी थाय
के तेमांथी उपर कहेला आश्रमो स्थापी शका-
य अने 'जैन पुस्तकालयो' विगेरे पण स्थापी
शकाय.—प्रकाशक.

पांच लक्षण

दर्पणमां जेम मों स्पष्ट जोई शकाय छे, तेम समकिती जीवमां 'पांच लक्षण' स्पष्ट देखाय छे (१) शम (२) संवेग; (३) निर्वेग; (४) अनुकंपा अने (५) आस्था

(१)"शम" अथवा "उपशम"— समकिती जीव क्रोध मंद राखे (क्षमा रीते), कोईनुं बुरुं चिंतवे नहि अने आर्त रौद्र ध्यान ध्याये नहि

(२) "संवेग"—पुद्गलनो स्वभाव पुरावुं अने गळवुं एवो छे एम समजी पुद्गलीक वस्तुओ उपरथी मुर्च्छाभाव (मोह भाव) उतारी, पंकज जे कादवमां जन्मेलुं

'पंकज' एटले कमळ जेवी रीते कादवथी अने आसपासना जळथी अद्धर रहे छे तेवी रीते दुनियामां होवा छतां अंतरात्माने दुनिआथी दूर राखे. कमल जेम सूर्य तरफ ज द्रष्टि राखे तेम ते समकिती जीव मात्र मोक्ष तरफ ज द्रष्टि राखे

(३) "निर्वेग":—पूर्व सुकृत्यथी सघळी इन्द्रिओ परिपूर्ण पामवा छतां ते इन्द्रिओने तेमना जूदा जूदा विषयोमां लुब्ध न थवा देतां तेमनो निग्रह करी तेमने धर्ममार्गे प्रवर्त्तावे

(४) "अनुकंपा":—'आत्मवत् सर्व भूतानि' एम जाणीने छकायना* जीवो

*छकाय—(१) पृथ्वीकाय (माटी—पथ्थर—रत्न·

आठ प्रकारे प्रभावक.

समकिती जीव पोते जे मार्गे सुखी थयो ते मार्ग अन्यजनोने बतावबानी पोतानी फरज समजे ए मार्ग पहेली द्रष्टिए लोकोने अकारो (अप्रिय) जणाय तो अमुक 'अमुक युक्तिथी नेमने ते मार्गनो शोख लगाडे एवा समकिती जीव जैन वर्शना 'प-

---

आंख-नाक-जीभ अने कायावाळा 'चौरेन्द्रिय' जीव, अने मनुष्य-देवता-तिर्यंच तथा नारकी ए चार प्रकारना 'पञ्चेन्द्रिय' जीव. ए चारेमां वळी घणा भेद छे. तिर्यंचमांना केटलाक जळमां चालनारा, केटलाक जमीन पर चालनारा, केटलाक पेटे चालनारा, अने केटलाक भुजथी चालनारा तथा केटलाक पांखथी उडनारा होय छे.

श्रावक' कहेवाय छे प्रभावक ८ प्रकारना होय छे, जेनाथी जे रीते प्रभावना थइ शके ते रीते करे

(१) "प्रवचनी" प्रभावक होय ते घणो सूत्रसिद्धांतनु जाणपणुं करीने जैनमार्ग दीपावे

(२) "धर्मकथी" प्रभावक होय ते उत्तम शैलिथी-मिष्ट स्वरथी-मधथी म रपुर धर्मकथा करीने लोकोने धर्म पमाडे अने ए रीते जैनमार्ग दीपावे

(३) "वादी' प्रभावक होय ते न्यायपुर शास्त्र विषे वाद-चर्चा करीने अन धर्मनी उत्तमता सर्वमान्य करावे अने ए प्रमाणे जैनमार्ग दीपावे

(४) "**नैमित्तिक**" **प्रभावक** होय ते निमित शास्त्र जाणे, लब्धि मेळवी तेनो उपयोग,ज्यारे धर्म उपर धाड पडती होय त्यारे अगर एवा कोइ खास कारणे(अपवाद तरीके)वैं नी इच्छा वगर, मानकीर्तिनी इच्छा वगर,भद्रबाहु स्वामी अने कार्तिकशेठनी माफक, करे अने ए रीते जीन मार्ग दीपावे.

(५) "**तपस्वी**" **प्रभावक** होय ते द्रव्य अगर मान आदिनी इच्छा रहित तप करीने धर्म दीपावे

(६) "**विद्यावान**" **प्रभावक** होय ते अनेक प्रकारनी विद्याओ* भणीने

* कोइ कहे छे के, विद्या एटले चमत्कारी विद्या, देव-देवीने साधवानी विद्या, पुण मैं

(८), "काव्य शक्ति वडे धर्मबोधने विविध खुबीओवाळी स्वाभाविक रसथी भरपुर कवितामां गुंथी धर्म सर्वने प्रियकर बनावे

षड् 'भावना'.

(१) "इदंसम्यक्त्वंधर्मस्यमूलम्" समकिती जीव एम 'भावना' भावे के, "आ सम्यक्त्व छे ते धर्मरुपी वृक्षनुं मूळ

पछी विद्यासपन्न (Scientists) नहि बनावे त्यां सुधी जीनवाक्योनी खुबीओ बराबर समजवामां नहि ज आवे. विद्या (Science) ना शत्रु अने मात्र शास्त्रोमां कहेलां गणित गोखवामां ज सर्व विद्यानो समावेश करी मिथ्याभिमानमां प्रुटी पडता लोकां उपर ज्यां

छे" मूळ वगर झाड रहो न शके। तेम ज समकित विना धर्म ए नामनो ज संभव नथी "चेतन तें मोच्छयो नहि सुं थयो व्रतधार" "साळ विहुणा खेतमां, दृथा पनायी वाड!"

(३)"इद सम्यक्त्व धर्मस्यद्वारम्' * समकिती जीव होय ते एम 'भावना' भावे के, "आ सम्यक्त्व छे ते धर्मरूपी दीप नगरमां पसवानो दरवाजो छे"

सुधी सर्व मागार राखी वत। बहेवाथा मा पन त्यो सुधी एम मधा देव पधना हिय गि सुधरमाम पन्न पंगहनी अ ज्याती

* पाम्मम्र —धमरूपी नगरन समकित रूपी गढ

(३) "इदं सम्यक्त्वं धर्मप्रतिष्ठानम्":—समकिती जीव एम 'भावना' भावे के, "धर्मरूपी भव्य महेलनो पायो समकित छे" (मकाननो पायो जेम वधार उंडो अने मजबुत तेम मकान वधारे मजबुत अने निर्भय बने छे)

(४) "इदं सम्यक्त्वं धर्माधारम्.":—समकिती जीव एम 'भावना' भावे के, "छापरुं जेम थाभलाना आधारे रहे छे तेम धर्म समकितना आधारे रह्यो छे"

(५) "इदं सम्यक्त्वं धर्मस्य भाजनम्":—समकिती जीव एम 'भावना' भावे के, "जेम घीनुं भाजन तपेलु तेम

धर्मनुं भाजन समकित छे' अपेक्षा वगर घी अने समकित वगर धर्म रही न शके

(६) "इद सम्यक्त्व धर्मस्य नीधि:"—समकिती जीव एम 'भावना भावे के "धमरुपी रत्नने जाळववाने समकित रुपी भंडार अथवा तिजोरी ( ) छे"

छ यत्ना (जयणा)

(१) "आलाप'—समकिती जीव, बीजा समकिती जीवने बोलाववानो विनय करे; जेमके 'आवो पधारो!'

(२) "सलाप'—समकिती जीवने विशेषे आदर सहित बोलावे, कुशळक्षेम पूछे, इत्या दे

(३) "दान":—समकिती जीवने अन्न-जळ मुखवास-धन आदिनुं दान आपे. [आ श्रावके श्रावकनी वात छे साधु-साधुने अगर साधु श्रावकने अगर श्रावक साधुने जूदा प्रकारनुं दान आपे. ज्ञानदान पण दान ज छे]

(४) "प्रदान":-विशेषे दान आपे.

(५) "वंदन":—समकिती जीवने वंदन-नमस्कार करे.

(६) "गुणग्राम":—समकिती जीवनी पूठ पाछळ तेनां वखाण करे *

---

* केटलाक आ छ यत्नानो तद्दन जूदोज अर्थ करे छे. समकिती जीवना संबंधमां ते बोल न उतारतां मिथ्यात्वीना संबंधमां उ-

छ 'आगार' (छ 'छींडी')

समकिती जीवे हमेश सद्दृशायोनी स लाह मुजब वर्तवाना सघी पगुं जोइए परन्तु कोइ कोइ प्रसगे तेने पोतानी ज धर्मनी विरुद्ध कोइ काम करवानी जरुर पडे छे ते प्रसंगा अने तेवे वखते केम विचारवु ते नीचे जणाव्यु छे:—

तारे छे; एटले के मिथ्यात्वीना आचकार, वि शापे आवकार, दान, प्रदान वगेरे अने गुण ग्राम न करवां आरा समजवा प्रमाणे, धर्म बुद्धिथी मिथ्यात्वीने 'आवो, पधारो' एम न कहेवुं अगर दान न देवुं ते बराबर छे पण घर आवेला हरकोइ माणसने आवकारथो ज नहि अगर हरकोइ धर्मना पु षोने दान क रवुं नहि, एवो कोइ विचार जेम शास्त्रोनो व पदेश होय ज नहि

(१) " रायाभियोग ":-राजाना कारणे काइ वखत धर्मविरुद्ध कार्य करवानी जरुर पडे; एटले के राजाना बळात्कारथी के कायदाथी कांइ करवु पडे अगर राजा संबंधी हरकोइ कारणथी पोतानी मरजी विरुद्ध पण अयोग्य करवुं पडे ते करती वखते समकिती जीव एम विचारे के, "हुं जो साधु होत तो मारे आ नापसंद काम करवानी फरज पडत नहि" आम अयोग्य काम करवाथी जो के दोषीत तो थवाय छे पण समकितनो नाश थतो नथी.

(२) "गणाभियोग":-नात-जात-कुटुंब आदिना आग्रहथी अगर तेमना कारणे शास्त्र विरुद्ध कार्य करवु पडे तो पण उपर मुजब

(५) "गुरु निग्रह" :—वडील-जन अर्थात् माता-पिता-शिक्षक-धर्मोपदेशक विगेरेना कारणथी कांइ अयोग्य करवुं पडे तो ते वखते पण उपर मुजब चितवे -(दृष्टांतः-गोशालो ढोंगी साधु छे, एम स्पष्ट जाणवा छतां तेने पाटपाटला विगेरे सकडाळ पुत्रे आप्युं ते मात्र पोताना गुरुना तेणे गुणग्राम कर्या ते कारणथीज आप्युं हतुं)

☞ आ छ 'छींडी' अथवा 'आगार' छे ते कांइ सर्व समकिती जीव माटे नथी जेओ दृढता न राखी शके तेवाने माटे छे धर्म हानी जवा करतां आगार राखीने ते आगारनो लाभ लीधा पछी घटीत प्रायश्चीत ले ते वधारे सारुं तेम छतां जे खरा धर्मिष्ठ जीवो छे-शुद्ध सम्यक्त्व जेने रगे रगे व्या-

पी रह्युं छे एम हृदरागी जीवो तो गमे तेवा आपत्ति समये—कसोटी थवाते पण—चळाव्या चळता नथी अने कायर था सम्यक्त्वने तीलमात्र पण खंडित करता नथी जेनाथी एवी दशा न रही शके तेमणे या भार रासना छता—तेनो लाभ लेवा छतां हमेशां हाष्ट तो आ दशा तरफ ज राखवी अने भावना तो एवी भाववी के ' धन्य छे ते दृढधर्मीओने, के जेओ भारा प्रसंगे पण टेक खंडोत करता नथी ! '

षट् स्थानक

मे कर्मा जे षट् दर्शन प्रवर्ते छे तेमणे आगनु मन्य मिथ्यात्व नथी सत्य अथवा धर्म जे मदृलमां छ ते मदमनो दरयामो तेओ

संपूर्ण खाली शक्या नथी अने जे काइ वे दरवाजा वच्चेनी थोडी सरखी जगामांथी जोइ शक्या तेने 'सत्यसर्व' मानी बेठा छे अने तेथी तेमांना कोइ तो मुद्दल जीवने ज मानता नथी; तेथी वधारे जोवा पामेलाओ जीवने माने छे पण तेने 'नित्य' मानता नथी, तेथी वधारे जोवा पामेलाओ तेने नित्य मानवा छतां 'कर्मना कर्त्ता' तरीके स्विकारता नथी; वळी वीजाओ तेने 'कर्मनो भोक्ता' मानता नथी दरवाजा ठेलवामां आ चार वर्ग जेटली फतेह मेळवी तेथी वधारे हतेह मेळवनारो पाचमो वर्ग ए चार सत्य जोइ शक्यो पण 'मोक्ष छे' ए वात तेना जोवामां-जाणवामां न आवी अने छट्टा वर्गे मोक्षने कबुल राखवा छतां तेना

'रस्वा'म ते वर्गजोइ न शक्यो परन्तु सम्यक्
विचार करनारो समकिती जैन ए छए वाक्य
शुध छे—जाणे छे अने समकितीनी ए छ
मान्यता कारणो आपीने साबीत करीशुं —

(१) आत्मा 'छे'

कोइ एम कहे के, 'आत्मा छे म क्यां?
शरीर ए ज आत्मा छे घर—वस्त्र—अलंकार
विगेरे चीजा छे तो ते देखाय छे पण खरी;
तेमज आत्मा होय तो देखाय केम नहि?"

"आत्मा छे ज क्यां? ए प्रश्न पूछ—
नारे विचारवुं जोइए के, जो आत्मा नथी ज
तो ए प्रश्न पुछयो म कोणे? घर—वस्त्र—अ—
लंकार आदि चीजोने जाणनार अने उपलो
प्रश्न पूछनार ए पात्र ज आत्मा छे शरीर

अने आत्मा ए बन्नेनो स्वभाव ज जूदो छे तो ते बे एक पदार्थ केम होइ शके ? शरीर-नो स्वभाव जड छे अने आत्मा चेतन छे-जाणवानो स्वभाव छे शरीर ए ज आ-त्मा होय तो जाडा शरीरमां थोडी बुद्धि अने पातळामां वधारे बुद्धि कदापि केम होइ शके ?

आत्मा अने देह एक लागवानुं कारण मात्र घणा काळनो खोटो महावरो-देहाध्यास छे हमेश देहना ज विचार थता होवाथी आत्मा अने ते एक मनाइ रह्या छे देहनो अकेक अवयव बीजा अवयवनां काम जाणी शकतो नथी आंख बोली शकती नथी अने जीभ देखी शकती नथी पण आंख, जीभ अने सर्व इन्द्रियोनां काम आत्मा जाणे छे.

शरीर आत्माने जाणतुं नथी कारण के ते
जड छे आत्माने जाणनाराओ पण आत्मा
ज छे जाग्रत, स्वप्न अने निद्रा ए त्रणे अवस्था
मां जवा छतां आत्मा ते त्रणे अवस्थाथी
जूदो छे; एटलुं ज नहि पण त्रणे अवस्था
वीत्या बाद पण आत्मा तो हयात छे अने
ए सर्व जाणे छे

(२) आत्मा 'नित्य' छे

आत्मा अने देह ए बे जूदा ज पदार्थ
जाणवामां आव्या अने आत्मानो स्वभाव
अरूप—अरूपी तथा देहनो स्वभाव रूप
अने रूपी जाणवामां आव्यो तो पछी, आ
त्मा स्पर्शादि उत्पत्ति पामतो नथी अने
देह साथे नाश पण पामतो नथी एम सिद्ध

थाय छे; कारण के, जडथी चेतन के चेत-
नथी जड उत्पन्न थइ ज शके नहि, तेमज
ते बन्नेनो साथे नाश पण न संभवे

वळी, सापमां जे अत्यंत क्रोध अने
उंदर-बीलाडी वच्चे जे वैर जोवामां आवे
छे तेनुं कारण वर्तमान देहे तो कर्युं नथी
कोइ पाछलुं कारण जोइए अने पाछलु
कारण विचारतां कबुल करवुं पडशे के,साप-
उंदर अगर बीलाडीना देहमां रही जे आ-
त्मा क्रोध के वैर प्रगट बतावे छे ते आत्मा
ते देहना पहेलां बीजी कोइ देहमां हतो.
एम आत्मा आदि के अंत वगरनो अर्थात्
नित्य छे एम कबुल करवुं पडशे

(३) आत्मा 'कर्त्ता' छे.

"कर्मोनो कर्त्ता आत्मा नहि पण कर्म

छे, अगर अनायास कर्म पनी आवे छे अ गर जो कर्मनो कर्त्ता आत्मा न होय तो कर्म करवां ए आत्मानो स्वभाव ठर्यो; तो पछी तेनो मोक्ष न समवे ' एवो संशय थ वा योग्य छे

परन्तु, चतन अथवा आत्मानी प्रेरणा रुप प्रवृत्ति न होय तो कर्म जे जड छे ते कांइ पण क्रिया केवी रीते करी शके ? माटे आत्मा ज कर्मनो कर्त्ता छे पण आत्मा ज्यारे कर्म करवां छाडी दे छे त्यारे कर्म बंध रहे छे तेथी आत्माने कर्म करवानो स्वभाव ज अगर धर्म न छे एम पण कही शकाय नाह

जो कर्मनो कर्त्ता ईश्वरने मानीए तो ईश्वर के जे शुद्ध—आत्म स्वभावे छे ते,कर्म

नो प्रेरक एटले दोषित थयो; माटे ए कल्प-
ना पण खोटी छे माटे कर्मनो कर्त्ता ईश्वर
नथी, तेमज ते अनायासे पण आवतां नथी,
तेमज कर्म ते जीवनो स्वभाव नथी; पण
आत्मा पोते ज कर्मनो कर्त्ता छे आत्मा जो
शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमा वर्ते तो ते आत्म-
स्वभावनो कर्त्ता छे अर्थात् निजस्वरुपमां
परिणमित छे; अने जो ते शुद्ध चैतन्यादि
स्वभावमां वर्ततो न होय तो कर्मभावनो
कर्त्ता छे.

(४) आत्मा 'भोक्ता' छे.

१ केटलाक कहे छे के, " आत्मा छे, ते
नित्य पण छे, अने कर्त्ता पण छे परन्तु
कर्म जड होवाथी ते कर्म फलपरिणामी थाय

अने आत्मा ते फळ भोगवे ए बनवा यो ग्य नथी '

परन्तु, कर्म कांइ फळ देतां नथी : स्व भावे ज फळदाता नीवडे छे मीठानो इरा दा एवो नथी के खानारनुं मों खारुं करुं, अने विषनो इरादो एवो नथी के कोइना प्राण लउं परन्तु ते बन्नेनो स्वभाव ज ए छे जेम मीठु अने विष खानार पोते ज तेनुं फळ भोगवे छे तेम कर्म करनारो पण पोते ज तेना फळनो भोक्ता छे जो एम न होत तो, एक माणस जन्मथी ज राजा अने एक जन्मथी ज भिखुक केम थइ शके ?

(५) मोक्ष 'छे'

केटलाक लोको मोक्षनी ख्याती मानवा

नुथी ; मोक्षने एक कल्पना मात्र माने छे. तेओ कहे छे के –" अनंता काळ वीती ज-वा छतां कर्म हजी हयात छे–संसार चाल्यां ज करे छे, तो पछी कर्मनो नाश अथवा कर्ममुक्तपणु–मोक्ष होइ ज केम शके ? वळी शुभ कर्मथी देवपणुं अने अशुभ कर्मथी नर-कादि भोगव्या ज करवानुं; पण जीवने क-र्मरहितपणुं थवानुं ज नथी."

आ कल्पना देखीती ज भूल भरेली छे, कारण के आ तो प्रत्यक्ष वात छे के, 'दिवस'थी प्रतिपक्षी कांइ चीज होवी ज जो-इए; अने ते चीज 'रात्री' छे 'ना' थी विरुद्ध कांइक होवुं ज जोइए, ज 'हा' छे तेमज 'बंध'थी प्रतिपक्षी कांइक होवु ज जोइए, के जे 'मोक्ष' छे.

शुभ अने अशुभ कर्मना करवाथी शुभ अने अशुभ फळनु भोगववापणुं मान्य राख्युं, तो पछी एम पण मान्य करवु ज पडशे के, शुभ—अशुभ कर्मना न करवाथी (एटले के, तेथी निवृत्त थवाथी) शुभ—अशुभ फळनुं पण भोगववापणु नथी ते ज मोक्ष प्रवृत्ति अगर कर्म करवापणुं जेम अफळ नथी तेम कर्मथी निवृत्ति पण अफळ नथी—अने तेनु फळ मोक्ष छे, के जेनुं बीजु नाम कर्मरहित पणुं छे अनंत काळ वित्यो ते कर्म प्रत्ये जीवनी आसक्तिना ज प्रभावे ; पण तेना उपर उदासीन भाव थवाथी कर्मफळ छेदाय अने तेथी मोक्षस्वभाव प्रगट थाय

(३) मोक्षनो 'उपाय' छे

मोक्षना विशाळ अधिकारने गम्या

माटे एक दीवो शक्तिमान छे. तेमां पण एरंडीआना दीवा करतां केरोसीननो दीवो वधारे अने तेथी ग्यासनो अने तेथी पण वीजळीक दीवो वधारे प्रकाश करी शके छे. तेमज 'कर्मभाव' एवु जे जीवनुं अज्ञान, तेनो नाश करवा माटे 'ज्ञान' रूपी दीवो छे अने ए ज्ञानमां पण 'आत्मज्ञान' ए विजळीक दीवो छे.

अजवाळा माटे अंधकारनो नाश करवो जोइए तेम मोक्ष माटे कर्मवंधननो नाश करवो जोइए.

राग-द्वेष अने अज्ञानःएनुं एकपणुं एज कर्मनी मुख्य गांठ छे ए विना कर्मनो वंध थतो नथी. तेनी निवृत्ति जेथी थाय तेज मोक्षमार्ग समजवो. जे मार्ग वडे

सत् (अविनासी), चैतन्यमय (सर्वभा वने प्रकासवा रूप स्वभावमय) अने के वळ (शुद्ध) एवो आत्मा–शुद्धात्मा पामीए एवुं प्रवर्तन थाय, ते ज मार्गने मोक्षमार्ग जाणवो

कर्म मुख्यपणे ८ प्रकारनां छे तेमां पण मुख्य 'मोहनीय कर्म' छे मोहनीय क र्मना पण ब भेद छे—

(१) दर्शन मोहनीय कर्म —परमार्थने विषे अपरमार्थ बुद्धि अने अपरमार्थने विषे परमार्थ बुद्धि रूप

(२) चारित्र मोहनीय कर्म —परमार्थ अनुसार, आत्मस्वभावमां स्थिरता ते चा रित्र ते चारित्रने रोधक एवा पूर्वसंस्कार

रूप कषाय अने नोकषाय : ते 'चारित्र मोह-
नीय' कर्म.

ए बन्ने कर्मने फेडनार तेना प्रतिपक्षी 'आत्मबोध' अने 'वीतरागपणुं' छेः—

(१) 'दर्शन मोहनीय' कर्मनुं कारण 'मिथ्याबोध' : तो तेनो उपाय 'आत्मबोध' ज होइ शके

(२) 'चारित्र मोहनीय' कर्मनु कारण रागादि; तो तेनो उपाय पण 'वीतरागपणुं' ज होइ शके

१ क्रोध विगेरेथी 'कर्मबंध' छे; अने प्रतिपक्षी क्षमाथी 'कर्मक्षय' छे, तेवी ज रीते उपलो भेद पण समजवानो छे

सर्वनु सत्व—अर्क ए नीकळ छे के, आत्मबोध अने रागद्वेषना त्यागना रूपी धर्म—एथी ज परिणामे मोक्ष छे अने ए रूपी पणुं जेनामां होय ते भले गमे ते वेष पहेरतो होय—गमे ते होय परन्तु ते सीधे रस्ते छे सीधो रस्तो अथवा समकित पामेलो माणस मोक्षनो पडोसी बने छे

आत्मार्थी जीवे आत्माना मुक्तपणा (कर्ममुक्तपणुं अगर मोक्ष) माटे हरहमेश चिंतवन कर्या करवुं जोइए अरराजानी जेम सकळ इन्द्रियो एकाग्र थइ कन्याना मेळाप तरफ ज लागी रही होय छे; लक्ष्या नीकळेला ज्ञानानुं एकदर लक्ष जेम बनुन पोताना पग तळे पडेलो जोवा लेमार रह्युं होय छे, तो

-ढाना तार उपर नाचनारा नटनुं सर्व चित्त जेम सुक्ष्म तारना मध्यबिंदुमां होय छे; तेम अने बराबर तेमज, आत्मार्थी जीवे मोक्ष अथवा मोक्षना साधन साथे त्रुटे नहि एवी लगनी लगाडवी जोइए

१ एवा आत्मार्थी जीवो अथवा जिज्ञासुओनी मोटी आशा मोक्षनी ज होवाथी, तेमनो मोटो आनंद पण ते संबंधनो ज होइ शके चोरीमां बेठेला वरने जेम व्यापारमां लाभना समाचार आनंद आपता नथी पण 'कन्यानी पधरामणी करो' ए शब्द आनंद आपे छे; पछी कन्यानुं वस्त्र दूरथी नजरे पडतां वधारे आनंद थाय छे; तेने पासे बेसाडवामां आवतां एथी वधारे आनंद

थाय छे अने इस्तमेळापथी वळी एथी पण वधारे आनंद थाय छ, तेमज मुमुक्षु जीवोने सांसारीक लाभथी, भोगविलासथी के की र्तिथी कांइ आनद थतो नथी; ए तो ब्य वहार साक्षीभूत थइ वर्त्ताय छे परंतु तेनो आनंद तो आत्मिक मार्गमां ज रह्यो होय छे कोइ परिमात्मानां दर्शन, रागद्वेप पर जीत मेळववानुं पोतायी थरायलुं कोइ पगलु, ज्ञान संबधी थयेला कोइ विचार ए ज तेने आनन्द आपी शके छे. ए दशा परिपक्व थाय त्यारे ए आशा वळी तेने ओर आनंद आपे छे अही एक सुंदर मुकाबलो लक्षमां लेवा योग्य छे सांसारिक आशा माणसने हमेश चिंताग्रस्त राखे छे, ज्यारे आ आशा

तेने आनंदमय राखे छे

ए स्थितिनी परिपक्व दशा अर्थात् सर्व आभासरहित आत्मस्वभावनुं जेमां अखंड ज्ञान वर्त्ते छे ते ज 'केवळज्ञान' एवा केवळी, देह छतां उत्कृष्ट जीवन्मुक्त दशामां समजवा.

देहाध्यास अथवा देह साथे एकता अने देहना धर्ममां अनुरक्ति मटे तो पछी जीव कर्मनो कर्त्ता नथी तेमज भोक्ता पण नथी ते मोक्ष स्वरुप ज छे: अनंत दर्शन-अनंत ज्ञान-अनंत सुख स्वरुप छे.

"हुं देहादिक सर्व पदार्थथी भिन्न छुं. म्हारुं आत्मद्रव्य कोइमां भळतुं नथी-कारण के आत्मा सिवायना पदार्थो जड छे तेमज कोइ म्हारामां भळतुं नथी स-

धर्मथी हुं भिन्न छुं माटे—

“ हुं शुद्ध छुं, बोधस्वरुप छुं, चैतन्य प्रदेशात्मक छुं, हुं अव्याबाध सुखमय छुं अने हुं स्वयंज्योति छुं

“ हुं स्वयंज्योति होवाथी मने प्रकाश नार हुं पोते ज छुं—बीजुं कोइ नथी स्व प्रकाश माटे जो हुं रुपी बाह्य तो रांक बीचारा धर्मनी शी सत्ता छे के मारुं नाम दइ शके ! एवी भावना हमेश मने होजो !

प्रकरण ६ ठुं.

धर्म तथा देव.

दुनियानी समस्त प्रजाओ धर्मनी इ-च्छा करे छे अने बीजी सर्व बाबतो करतां धर्म तरफ वधारे माननी लागणीथी जुए छे केटलाक तो मात्र अमुक शब्दो अथवा अमुक क्रियाओने ज धर्म मानी लइ ते पाछळ पोतानी जींदगी अर्पण करे छे.

मात्र अभण अथवा ओछा केळवायला

लोको जे धर्म तरफ थोडी घणी आस्था
धरावे छे, एमनयो पणी ऊलटुं महाविद्वानो
धर्म तरफ सामान्य प्रभा करतां वधारे आ
स्था धरावता जोवामां आव्या छे इंग्लंडनो
नामी प्रधान ग्लेडस्टन साहेब के जे प्रभय-
कुमारनो नमणो हाथ गणातो ते ज्यारे
ज्यारे दुनियाना कामकाजथी कंटाळतो अ
गर ज्यारे ज्यारे तेनुं माथुं दुःखतुं त्यारे
ते 'बायबल' लइने बेसतो ते कहेतो के संकटो
वार 'बायबल' वांचवा वखते हरवखत तेमांथी
मने एवी एवी खुशीओ नही आवे छे के
चिंताओ अने दुःखो ते खुशीओनी प्रभा आ
गळ अदृश्य थाय छे

ए धर्मे युरोपनी प्रजाने १००० थी

वधारे वरस सुधी अज्ञानमय-दुःखमय-जुल्मी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं त्यारे जे धर्मे मनुष्योने हजारो वरस सुधी सुख आप्युं छे-जे धर्म आपणने सर्व विद्यानुं ज्ञान आपे छे-जे धर्ममां बीजा धर्मोनी माफक परस्परविरोध छे ज नहि: एवो धर्म आ जन्ममां दीलासो अने आवता जन्मोमां सुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे तेओ प्रायः दुःख जोईने ज मानवा लाग्या छे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं सुख मळे एवी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे धर्मनुं मूळ सिद्धान्तो अने

लोको ज धम तरफ भारडी घर्षा आस्था धराबे छे, एमनथी एथी उलटु महाविद्वानो धर्म तरफ सामान्य मना करवा पधारे आ स्था परानता जोवामा आव्या छे इग्लडनो मामी प्रधान ग्लेडस्टन साहेब क मे प्रभय कुमारनो ममणो हाथ गणातो त ज्यारे, ज्यारे दुनियाना कामकाजथी कटाळतो अ गर ज्यारे ज्यारे तेनु मायु दुखतु त्यारे ते 'बाइबल' हाथे लेसतो त फहेनो के सेंकडो वार 'बाइबल' वाचता छता हरवखत तेमाथी मने एवी एवी खुबीओ मळी आवे छे के चिताओ अने दु खो ते खुबीओनी मधा आ गळ अदृश्य थाय छे

भ धर्मे युरोपनी मनान १००० थी

वधारे वरस सुधी अज्ञानमय–दुःखमय–जु-
ल्मी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी
आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं
त्यारे जे धर्मे मनुष्योने हजारो वरस सुधी
सुख आप्युं छे–जे धर्म आपणने सर्व विद्या-
नुं ज्ञान आपे छे–जे धर्ममां बीजा धर्मोनी
माफक परस्परविरोध छे ज नहि : एवो धर्म
आ जन्ममां दीलासो अने आवता जन्मोमां
सुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे
तेओ प्रायः दुःख जोइने ज मानवा लाग्या
छे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं
सुख मळे एवी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे धर्मनुं मूळ स्विकारतां अने

सर्व जीवोने सुख दुःखपी सारी नरमी ला गणी थाय छे ते विचारतां, आपोआप म समजाय छे के, धर्म कोइ दिवस कोइ पण जीवना दुःखमां समायलो नथी जीवा च स्दोमां कहीए तो, " अन्य जीवोन सुख आपीने ते रस्ते पोता माटे सुख मेळववानी जे कळा तेनुं नाम ज धर्म "

आ एक धर्मनी सामान्य व्याख्या थइ दुनियानो कोइ माणस—गमे ते चाहे ते ध धनो भक्त हाय पण आ सादी व्याख्या ना कबुल करी शकशे नहि अने जो ते नाकबुल करवानी हिंमत धरावतो होय तो ते माण-सायी पण दूर रहेवानी हिंमत धरावतो होवो जोइए

जरथोस्थि, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे केः-'मनसा', 'वाचा' अने 'कर्मणा' (मनथी—वचनथी अने कृत्योथी) शुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे दुनियाना सर्व धर्मो ए ज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए ? परन्तु पायो एक छतां इमारत बांधवामां जूदा जूदा हाथोनी कारीगिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. कोइए भीलनां झुंपडा बांध्या, कोइए खेडुतनां माटीनां घर बांध्यां; कोइए एक माळनां इटोना घर बांध्यां; कोइए बगला बांध्या अने कोइए मजबुत दीवालवाळा सुशोभित

सात माळना दीर्घ महेल बांध्या ९

मन, वचन अने शरीरनी शुद्ध वर्तणुक तथा परोपकारनो उपदेश करवा छतां, एज उपदेशक को धर्मनी खातर होम, यज्ञ पूजा, निवेदनो उपदेश करे तो शु ए उप देशमां परस्परविरोध स्पष्ट जणातो नथी ?/ अने शुं ए परस्परविरोध ते उपदेशकनी स्वार्थबुद्धि अथवा जीवाजीवना ज्ञाननी ग रहाजरी साबीत करवा बस नथी ?

वेदनो स्पष्ट पोकार छ के " अहिंसा परमो धर्म ", अने तेम छतां वेद ज हिंसक क्रियाना उपदेश करे छे ए केम समजाय ? मन शुद्धनो उपदेश करनार तो वेना सधर्मां एवुं ज—— प्रकाश के, तेणे सुंदर पाया

उपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी ज बांधी! एवी रीते दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोक्ष अथवा नीजरुपपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन कर्युं छे ते पद्धतिने 'जैन धर्म' ए नामथी लोको ओळखे छे, कारण के तेमां स्वार्थ अने हिंसा उपर जय मेळववानो ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथी-आर पण पुरां पाडयां छे.

एना उपदेशमां हिसा अने स्वार्थीपणा-नो अंश मात्र नथी अने जो कदाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो बतावी शके के जेना उपर जैन नाम

सर्व जीवोने सुख दु:खथी सारी नरसी लागणी थाय छे ते विचारतां, आपोआप अ समजाय छे के, धर्म कोइ दिवस कोइ पण जीवना दु:खमां समायलो नथी जीवा व स्थोमां कहीए तो, " अन्य जीवोने सुख आपीने त रस्ते पोता माटे सुख मेळवानी जे कळा तेनुं नाम ज धर्म "

आ एक धर्मनी सामान्य व्याख्या थइ दुनियानो कोइ माणस—पछी ते चाहे ते प धनो भक्त हाय पण आ सादी व्याख्या ना कबुल करी शकशे नहि अने जो ते नाकबुल करवानी हिमत धरावतो हशे तो ते माण साथी पण दूर रहेवानी हिमत धरावतो होवो जोइए

जरथोस्थि, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे केः-'मनसा', 'वाचा' अने 'कर्मणा' (मनथी-वचनथी अने कृत्योथी) शुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे दुनियाना सर्व धर्मो ए ज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए ? परन्तु पायो एक छतां इमारत बांधवामां जूदा जूदा हाथोनी कारीगिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. कोइए भीलनां झुंपडा बांध्यां, कोइए खेडुतनां माटीनां घर बांध्यां; कोइए एक माळनां इटोना घर बांध्यां; कोइए बगला बांध्या अने कोइए मजबुत दीवालवाळा सुशोभित

सात मालना दीव्य महेल सोध्या

मन, वचन अने शरीरनी शुद्ध सर्वगुरु तथा परोपकारनो उपदेश करवा छतां, एज उपदेशक जो धर्मनी स्थापना होम, यज्ञ पूजा, निषेदनो उपदेश करे तो एज उपदेशमां परस्परविरोध स्पष्ट जणातो नथी ? अने एज परस्परविरोध ते उपदेशकनी स्वार्थबुद्धि अथवा भोळाभोळीना ज्ञाननी गरजरी साबीत करवा बस नथी !

वेदनो स्पष्ट पोकार छे के " अहिंसा परमो धर्म ", अने सत्य छतां वेद ज हिंसक क्रियाना उपदेश करे ते केम संभवे ! अने जो ते एवो उपदेश करे तो तेना सत्यमां एटलुं ज कही शकाय के, तमे सुंदर पाया

उपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी ज बांधी ! एवी रीते दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोक्ष अथवा नीजरुपपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन कर्युं छे ते पद्धतिने 'जैन धर्म' ए नामथी लोको ओळखे छे, कारण के तेमां स्वार्थ अने हिंसा उपर जय मेळववानो ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथीआर पण पुरां पाड्यां छे.

एना उपदेशमां हिंसा अने स्वार्थीपणा-नो अंश मात्र नथी अने जो कदाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो बतावी शके के जेना उपर जैन नाम

हाय अने जेनी अदर हिंसक कृत्यनो उपदेश होय, यो ए पुस्तक 'जैनसेख' नहि पण बनावटी अ समजवुं उत्तम चीजो नी खोटी नकलो हमेश थया ज करे छे

जैन सिद्धांतोए अहिंसानी उत्तमता स्विकारया छतां ते पाळवामां रहेली मुश्के-लीओ पण लक्षमां लाधी छे, अने तथी 'सा गारी' अने 'अनागारी': एवी बे शाखाओ धर्मनी बनावी छ जे छोकरो अभ्यास छोडी आखा दिवस रम्या करतो होय तेने सुधा रवा अर्थे प्रथम तेनो पिता कहे के तारे सवार-ना ७ थी १० सुधी तो नहि ज रमवुं आ था प्रथमां '१० वाग्या पछी रम्‌ज' एवा हुकम समाना नथी पण ७ थी १० सुधीना निषध

मां लाववानो ज समावेश थाय छे. धीमे धीमे ए नियमने वधारवामां आवे छे अने छेवटे छोकरो पोताना काममां मशगुल बने छे. ए प्रमाणे आ जैन सिद्धांतो पण रात्रिदिवस हिंसकवृत्ति अने स्वार्थमां रहेला मनुष्योने माटे प्रथम 'सागारी' धर्मनो रस्तो बतावे छे अने ए धर्ममां स्थिर थयेलाओ माटे 'अनागारी' रस्तो बतावेछे.

'सागारी' धर्म पाळनारा 'श्रावक' नामथी ओळखाय छे अने 'अनागारी' (अणगार) धर्म पाळनारा 'साधु' नामथी ओळखाय छे सागारी धर्म पाळनारे पोतानी दृष्टि हमेश अनागारी धर्म उपर टेकववी जोइए, नहि के चालु स्थितिथी

संतोष पामी अटकी रहेवुं जोइए पां-
च हजारनी मुडीवाळा गृहस्थो एटलेथी
संतोष पामी बेसी नहि रहेतां लाख मेळ-
ववा तरफ ज दृष्टि राखे छे—जो के लाख
मेळववानु थोडानाज नसीबमां होय छे तेमज
अनागारी धर्म पण थोडानाज नसीबमां होय
छे,तो पण हमेश 'आशय उच्चतर ज राखवो'
(Aim High) ए सूत्रनुं लक्षण छे उत्तम
पदार्थनो लोभ हितकर ज छे

अनागार धर्म (साधु धर्म)

साधुनी सत्तावीश प्रकारनी योग्यता अथ-
वा गुण निचे पाछळ बीजा प्रकरणमां कहे-
वाइ गयुं छे तेमनी दृष्टि हमेश आत्मसाधन

तरफ ज होय छे ए आत्मसाधनना धर्ममां जे नवां नवां तत्त्वो अंतर्दृष्टिथी जोवामां आवे छे अने तेथी जे अंतरानंद थाय छे ते अकथनीय छे. युरोपियन कवि ' काउपर'नी नीचली लीटीओ आ संबंधमां तद्दन साची ज छेः—

" Religion ! what treasures untold
" Reside in that heavenly word !
" More precious than silver or gold
" Or all this earth can afford."

ए आत्मिक धर्मना खजाना खरेखर सोना–रूपा करतां अगर दुनियानी हरकोइ वस्तु करतां घणा ज कीमती छे एवो अनुपमेय, अकथनीय अने स्वतंत्र आनंद जे(साधु)ने मळ्यो होय ते पछी दुनियाना व्यव-

कारन अने तेनी दुःखपरिणामी लोकमतोने कदी पण केम स्विकारे ? संसार अने संसा रना पुतळा रुप पुद्गलिक शरीरनी सटपटो तेने केम पसंद पडे ?

साधु-धर्ममां नीचेनां 'पंच महाव्रत' * नो समावेश थाय छेः—

(१)प्राणातिपात विरमण व्रतः-एकेन्द्रि-यथी पंचेन्द्रिय सुधीना स्थावर तमज त्रस जीवोने पोताना सरखा गणीने, पोतामां जेवी ज तेमनामां आत्मसत्ता छे एम मा-नीने, ते सर्वनी दया पाळे अर्थात् पोते

* ख्रीस्ती धर्ममां पण एवीज पांच मनाओ (Commandments) छे—Thou shalt not kill Thou shalt not steal &c.

हिंसा करे नहि, *बीजा पासे करावे न-
हि अने कोइ करे तेथी मनमां राजी था-
य नहि.

(२) मृषावाद विरमण व्रतः—मृषा अ-
थवा खोटुं बोले नहि. अही खोटुं बोलवा-
मा मात्र जूठुं बोलवानो ज समावेश थाय
छे एम नहि; परंतु जे जे वचनो अप्रिय,
अपथ्य अने अतथ्य होय ते सर्वनो समा-
वेश थाय छे. अर्थात् साधुए दरेक वचन
प्रिय, + पथ्य अने तथ्य बोलवुं. प्रिय

* हिंसा ८ कारणोथी थाय छेः—अज्ञान, संशय, विपर्यास, राग, द्वेष, स्मृतिभ्रंश, योग-दुःप्रणिधान अने धर्मनो अनादर.

+ वेदमां पण कह्यु छे के, "सत्यम् ब्रूहि, प्रियम् ब्रूहि."

पटले के सांभळनारी कोइना मीतने क्लेश न थाय, पथ्य पटले के वचन बोल्ले सरवाळे हितकारी नीवडे अने तथ्य पटले यथा तथ्य अथवा साधु जे वचनमां ए मणे नियम सचवाता न होय तेवुं वचनबोल्वा करतां साधू मौन रहेवुं वधारे पसंद करे

(३) अदत्तादान विरमण व्रतः—कोइ पण वस्तु कोइना आप्या सिवाय ले नहि

(४) मैथुन विरमण व्रतः—सर्व प्रकारे स्त्रीसमागम तजवो आ व्रतना रक्षणार्थे समर्थ पुरुषोए 'नव वाड' अथवा नव किल्ला योज्या छे, के जेथी विषयमूर्छाना सम्भालीआनो संयम भ रहे नहि

(५) परिग्रह विरमण व्रतः—धन–धा-

ती आदि हरेक प्रकारना परिग्रह के जे आत्माने ममत्वभावथी 'वंधीवान' बनावे छे तेनो सर्वथा साग साधुए करवो पडे छे.

सागारी धर्म (श्रावकनो धर्म).

सास्वता सुख अथवा मोक्षना पगथी-आ रूप सागारी धर्म बार प्रकारे कह्योछे. परन्तु ते बारेनो समावेश "स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत"मां थइ शके पृथ्वीमां केटलाक जीवो स्थूल एटले मोटा छे. अने केटलाक सूक्ष्म छे वे इन्द्रिय आदि त्रस जीव ते स्थूल समजवा अने एकेन्द्रिय स्थावर जीव ते सूक्ष्म समजवा. आ बे प्रकारना जीवो पैकी, श्रावक अगर सागा-

री धर्म पाळनारो मात्र स्थूल जीवनी भ हिंसाथी दूर रही शके छे, सूक्ष्म जीवो तो संसार व्यवहारना दरेक कार्यमां हणाया करे छे, तेनो नियम ते छइ शकतो नथी तोपण बनतां सुधी तेनी 'यत्ना' अथवा समाळ राखवानुं तो ते लक्षमां राखे छे

स्थूल जीवनी रक्षामां पण अमुक सरतो (Conditions) श्रावक राखे छे पहेली सरत ए के, स्थूल जीवने संकल्प करीने (Intentionally) मारवा नहि; बीजी सरत ए के, निरपराधी स्थूल जीवने मारवा नहि; त्रीजी सरत ए के, निरपेक्ष हिंसा करवी नहि

आ रीते श्रावके पण अमुक हिंसा त्या

गवानी स्थितिए पहोचवानी उमेद राखवी जोइए तोपण ते स्थितिए आवतां पहेलां आटली छूटवाळुं फरमान तेने बताव्युं अणसमजु लोको श्रावकोने माथे खोटुं आळ चडावे छे के, तेमनो धर्म तो तेमने न्हावानी मना करे छे; अने तेओ नाना जीवने वचावनारा अने मोटाने मारनारा छे अत्रे आपेला खुलासा उपरथी समजाशे के,ए तहोमत केवळ वीनपायादार* अने द्वेषमय छे

* 'वनराज चावडो' ए नामना पुस्तकमा तेना सुप्रासिद्ध कर्त्ताए जैन धर्म माथे गुजरातनी परतंत्रतानो आरोप मुकयो छे अने देशरक्षणार्थे पण श्रावकोने लडता तेमनो धर्म नाम

अहिंसा नामनुं आ पहेलुं व्रत पाळवा उपरांत, जूठ—चोरी—व्यभिचार अने तृष्णा

करे छे एवो सिद्धांत हास्यास्पद प्रसंग आपी बीवरी बताव्यो छ; ते मात्र जैन सिद्धांतोना रहस्यथी अज्ञानतानुं ज परिणाम छे आश्चर्यनी वात छे के, ए जैन धर्म जेवा स्वाभाविक अने न्याययुक्त (rational) धर्मनी खोटी निंदा करनार विद्वाने जैन राजाओ युद्धोमां केवां पराक्रम करता ते जाणवा दरकार करी नथी.हुं (के जे एक सागारी धर्म पाळनारो छुं) एम कहि शकीश के संसारी प्राणी ज जमीनमांथी खाय छे ते जमीन (मातृभूमी)ना रक्षणार्थे मरवा तैयार थाय तो ते अपराधी साथे लडे छे, परमार्थ लडे छे हिंसा करवाना हेतुथी ज नहि पण हिंसकने ... करवाना हेतुथी लडे छे अने

ए वारथी निवर्तवा रुप ४ वीजां व्रत पण तेणे पाळवानां छे. आ ' पांच अणुव्रत '+

तेथी पोताना सागारी धर्मने उल्लववानो अर्थात् लीधेला नियमने तोडवानो दोष वहोरतो नथी, जो के हिंसानो दोष तो लागे ज परन्तु एक संसारी तरीके उपला संजोगोमां पण जो ते लडवुं पसंद न करे तो बेहेतर छे के तेणे साधुपणुं अथवा आगार वगरनो धर्म स्विकारवो —प्रकाशक

+ साधु ए पाच व्रतो सर्वथा—काइ पण आगार सिवाय पाळे छे माटे साधुना ' पच महाव्रत ' कहेवाय छे अने श्रावक ते सर्वांशे पाळी शकतो नथी पण अमुक छूट राखवी पडे छे माटे तेना ' पच अणुव्रत ' कहेवाय छे.

कहेवाय छे

ए पांच उपरांत बीजां ७ व्रत श्रावके पाळवानां छे ते टुंकमां नीचे मुजब छे —दीशानी मर्यादा, परिग्रहनी मर्यादा, अनर्थदंड अथवा निष्प्रयोजन थता दोषोथी विरक्ति, सामायिक नामनुं ध्याननुं व्रत, दीशावगासीक व्रत, पोषधव्रत अने अतिथि संविभाग व्रत (ए सातनो विस्तार अन्य कोइ पुस्तकमां जोइ लेवो)

दे व

आ महिनो मेज्ञो भाग आमना बोधको जोइ शक्या छे तेथी घणो मोटो भाग हमी वेमनाथी अनाव्यो छे 'वीतराग बोंध'मां'वोद रामभोक'नु वर्णन आप्यु छे के

जेमां सकळ विश्वनी भूगोळ-खगोळ आ-वी जाय छे ए सर्व जमीन अने तेमां र-हेला प्राणी-पदार्थोमां जूदा जूदा खास गुणो रह्या छे ए गुणो ए तेमनी कुदरत छे कुदरतने आदि नथी, अंत नथी. न्या-सजीए पहेरेली पाघडीना जो अंत के आ दि जोवामां आवे तो कुदरतना आदि-अंत हाथ लागे. तेनो कर्त्ता कोइ नथी. ते नाश पामतो नथी पण समय समयमां ते-नां रूपांतर थयां करे छे तेथी सामान्य मनुष्यो तेने नाश पामती माने छे. पृथ्वी-नो कर्त्ता कोइ होइ शके ज नहि एवी मा-न्यताने आधुनिक जमानाना युरोपियन विद्वानो पण टेको आपे छे.

ज्यारे ईश्वर कर्ता* नथी त्यारे पछी ए
नी पूजा–अर्चा करवानुं तो क्यां ज रह्युं?
अने कुदरत तो जड छे तेनी पूजा शुं?

'देव'ना संबंधमां घणा लोको भूला
मण छे देव शब्द 'दिव' एटले प्रकाशवुं
ए उपरथी नीकळ्यो छे 'देव' एटले नाम
'प्रकाश'; अथवा ज्ञानादि आत्मिक तेजथी
प्रकाशीत आत्मा, जेमणे स्वभावथी प्रका

---

* ईश्वरने कर्त्तापणुं नथी एवा सिद्धांतनी मा-
हीती माटे वांचो श्रीमती पार्वतीजी कृत 'सम्य
क्त्व सूर्योदय' [हिंदी भाषामां मोटो ग्रंथ–मूल्य
रू. ।।। 'जैन हितेच्छु' ऑफिसमां मळशे]।
देवधर्मनी पीछाण माटे ए पुस्तक खास वांच
वा—भलामणा करुं छुं

शमय आत्मा उपरनो मेल दूर करी 'नीजरूप' मास कर्युं छे.एवा एक बे नहि पण असं- ख्य आत्माओ देव छे तेमने एकपणे मा- नो अगर अनेकपणे मानो ते सरखुं ज छे; सर्वने देवपणुं एक (सामान्य) कारणथी ज आरोपीए छीए

'वीतरागनोंय' बोधे छे के, " तमारा पग उपर उभा रहो. करशो तेवुं पामशो अने वावशो तेवुं लणशो. अमे केवी रीते वाव्युं के जेथी उत्तमोत्तम फळ लण्युं, ए जाणवा कोशीश करो अमने याद करशो तो अमारां ते कामो पण याद आवशे अ- ने तेथी कोइ वखत अनुकरण पण करी शकशो. बाकी तो तमारुं कल्याण तमारा

हाथमां ज छे अमारी सत्ता नथी के कोइने कांइ आपी शकीए "

केवु निष्पक्षपात कथन! केवी वीतरागी भाव! केवो सरस आत्मसंश्रय (Self-reliance)नो पाठ! आ आत्मसंश्रयनो पाठ ज्यारे लोको बराबर समजशे त्यारे ज सामाजिक अने आत्मिक उन्नति थशे पारका पगे [illegible]नी आशा राखनारा माभ, प णु मोडु थाय छे त्यारे, पस्तावाना प्रसंगो ज पामे छे ईश्वर आपणा माटे अवतार लइने आपणी बांय झाली विमानमां बेसा- डी लइ जाय,एवी मान्यतामां केटला यथा लोको पीवाता आ अमुल्य मनुष्य देह- [illegible]णु गुमाय छे !

अज्ञान, क्रोध, मद, मान, माया, लोभ, रति, अरति, निद्रा, शोक, असत्य, चोरी, मत्सर, भय, हिंसा, प्रेम, क्रिडाप्रसंग अने हास्य : ए अढार दोष वगरना देवनुं स्वरुप जाणनाराओ कदी कोइ जातना व्हेममां फसासे नहि कारण के देवने जन्म—मरण छे नहि, करवापणुं छे नहि, रागद्वेषादि छे नहि, रुपरंग छे नहिः मात्र ज्ञानानंद रुप तत्व ए ज देव छे, के ते तत्वने हुं अने तमे (प्रयास करीए तो) पामवाना छीए.

प्रकरण ७ मु

मिथ्यात्व*

सोनु अने पीतळ ए बन्नेना स्वभावना आणपणा वगर सोनु ओळखाइ शकतुं नथी तेमज, सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व बन्नना स्वभावना आणपणा वगर सम्यक्त्वनी कदर थइ शके नहि

---

*'मिथ्यात्वनो अर्थ 'व्हेम' थइ शके व्हेम बे प्रकारनो (१) Superstition खोटा पदार्थने भ्रमथाने साचा तरीक मानीए ते तथा (२) Suspicion साचा पदार्थमां शंका राखीए के आ साचुं हशे के केम ते जैन मार्ग निःशंक

घणीए भोळी श्राविकाओ के जेओ उ-
पाश्रये * हमेश जाय छे, सामायिक ×
नित्य करे छे अने धारेला + गुरुनां द-

(Unsuspecting) होवाथी उमदा खवासनो
छे अने व्हेमो(Superstitions) वगरनो हो-
वाथी सुधरेलो (Refined) छे, ए बे गुणो ते-
ने आ न्यायप्रिय जमानानो सर्वमान्य धर्म बना-
ववा समर्थ छे.--मात्र समर्थ लेखको अने उपदे-
शकोनी न्यूनता छे

* उपाश्रय, an asylum

× सम भाव (रागद्वेषरहितपणुं--आत्म-
गुण)मा स्थिर रहेवानुं ४८ मीनीटनुं व्रत(ध्या-
न जेवुं ज)

+ केटलाक वेश लजवनारा साधु स्त्री--पु-

अने स्वर्गना देवना हाथमां, मनुष्यना पूर्व भवनी करणी सिवाय,* कांइ देवानी शक्ति नथी. तो पछी नाहक वखत, पैसो अने शरीरबळना भोगे तथा शुद्ध सम्यक्त्व-रत्नना खर्चे शा माटे मिथ्या भ्रमण करवुं?

माटे सम्यक्त्वना शोखीन प्राणीए मिथ्यात्वना, नीचे समजावेला २५ भेद बराबर समजीनं पोताना आत्माने तेनो 'संघट्टो'* न थवादेवा सावचेती राखवी जोइए.

* "Man is the architect of his own fate" and "Nothing can work me damage but myself, the harm that I sustain I carry about with me, and I am never a real sufferer but by my own fault"—St Bernard

* संघट्टो—स्पर्श—आभडछेट.

(१) 'अभिग्रहीक मिथ्यात्व'-

जे मनुष्यो हठवाद करी, कदाग्रह छोडे नहि अने सामो माणस खरी दलील स्पष्ट समजावे तोपण 'गधेडानुं पुंछडुं पकड्युं ते छोडे नहि' तेने "अभिग्रहीक मिथ्यात्वी" कहे छे दृष्टांत तरीके 'लोह वाणिया'नी वात सुप्रसिद्ध छे; तेणे पकडेलु लोढुं माथे मुकीने आगळ चालतां रुपुं–सोनुं–जवेरात विगेरेना समुह जोवा छतां लोढुं छोड्युं ज नहि अने नाहक निर्मोल्य चीज उपाडीने दुःखी थया तेम ज केटलाक माणसने ज्ञाननी वात समजावीए त्यारे कहे के, हुं आटला दिवस ज्ञान वगर परभु रह्युं हतु के? अमे तो भ

मारे 'करता होइए ते करीए अने छासनी दोणी भरीए' एवा विचारा 'अभिग्रहीक मिथ्यात्वी जीवो'ना नसीबमां दहीं-माखण-मलाइ-घी क्यांथी होय ?

(२) अनाभिग्रहीक मिथ्यात्व.

केटलाक भोळा जीवो एवा होय छे के जेओ वितराग देव, तेमणे भापेलो धर्म अने तदनुसार वर्तनार साधुओने मानवा छतां कहे छे के, 'आपणे तो सर्व देवने नमवाना अने सर्व धर्मने मानवाना' एमनामां 'अनाभिग्रहीक मिथ्यात्व' समजवुं.

जे देवोमां 'सुदेव'नां लक्षणो न होय, जेमनो मार्ग दयानो न होय, जेमना आ-

चार विचारमां परस्परविरोध आवतो होय तेमने देव तरीके मानवा—पूजवाथी शुं बुद्धिने आवरण न लागे ? श्री वीतराग देवने स्मरवानुं कांइ कारण होय तो ते एज छे के, ए वडे तेमना ज्ञान—गुणनो अंश आपणामां आवे; बाकी तो सृष्टिव्यवहारमां कोइ रीते तेओ आडा आवे* अने आपणने मदद करे एवुं मानवुं ए वीतरागनी वीतरागता उपर कलंक चडाववा जेवुं अने सृष्टिनियम विरुद्ध छे एमज,

---

* 'मेषरामिस्ट' लोको जैन धर्मना आ सिद्धांतोमां पोताना विचारोनी प्रतिछाया जोइ एक नवो पुरावो मळवा माटे बेहद आनंद पामशे

असतदेव–असत्गुरुने मानवा–पूजवाथी पण तेमना ए असत् गुणो भक्तमां प्रवेश करे एमां शी नवाइ ?

आ अज्ञानना बन्ने छेडे भूल करनारा सेंकडो जनो छे. केटलाक ज्यारे सर्व देव उपर पूज्य दृष्टि राखवा तैयार थाय छे त्यारे बीजा केटलाक वळी असत्देव–असत्धर्म अने असत्गुरुने गाळो भांडवामां, निंदवामां, अपमान पहोंचाडवामां ज धर्म माने छे–समकितनुं लक्षण माने छे. आथी वधारे भयंकर मिथ्यात्व बीजुं कयुं ? सम्यकत्वनां पांच लक्षणमां पहेलुं ज लक्षण ' उपशम ' कह्युं छे; एमां अपराधी उपर पण क्षमादृष्टि कही छे; तो पछी अज्ञान-

मां भूला भटकता माणोसो उपर कोप करवानी सो वात न कर्या रही ? ' पहेला उपर पाट्ठु ' (लाव) मारवानी पॉलीसी जैन सूत्र तो कदी स्विकारतु नथी

एक लौकिक दृष्टांत आनो सच्चो खुलासो करी शकशे एक माणस बजारमां जवा माटे घेरथी नीकल्यो रस्तामां तने ५०० माणसो मल्या अने पोताना पिता पण मल्या पिताने 'पिताजी' कही नमस्कार कर्या पण पेला पांचसोने चीमकुल बोलाव्या नहि शु पोताने 'पिताजी' नहि कहेवा माटे ते ५०० माणसो तेने मीना की—पदोष के अविवेकी कही शकशो ? मगर शु तेणे ते पांचसोने पण ' पिताजी '

कह्या होत तो ते डहापण कयुं कहेवात ? पिता तरीकेनुं अभिधान अने सन्मान मात्र तेना ज माटे छे के जेणे जन्म आप्यो होय तेमज जेओ एवा उपकारी नथी तेओ पण थुंकवा लायक अने 'नीच-दुष्ट' आदि गाळो वडे अपमान पहोंचाडवा लायक तो नथी ज

(३) अभिनिवेषिक मिथ्यात्व.

कोइ मनुष्य वीतराग देवनो धर्म पामी, सूत्र भणी अहंकारे चडी जाय अने द्रव्य खातर अगर एक वखत पोतानी थयेली भूल उघाडी न पडवा देवा खातर अगर एवा कोइ आशयथी श्री वीतराग

देवना वचनो उथापे–उत्सूत्र परूपणा*

*(१) 'तिसुत्तो' ना पाठमां अने बीजी घणी जगाए 'चेइयं' शब्द जेनो 'ज्ञान' ना अर्थमां वपरायलो छतां तेन 'मूर्ति'मां अर्थमां करीने तथा 'निक्षेप'नो खोटो अवळो अर्थ करीने केटलाक माणस पथरानी पूजा करवी अने पुस्तको ग्रंथो रच्या (२) युरोपियन पंडीत हर्मन जेकोबीए आचारांग सूत्रनो अंग्रेजी तरजुमो कर्यो तेमां 'जैन साधुने मांस खावुं कल्पे' एवो अर्थ कर्यो आ बन्ने दृष्टांतमां फरक एटलो ज के, पहेला दृष्टांतमां जाणीजोइने अपराध (intentional crime) थया छे अने बीजा दृष्टांतमां गुरुगमना अभावे अज्ञान छे अंधकारमां कोइक दिवस दिपक आवशे, पण धोळे दहाडे भमवा वखमां बेठेल बीकी नगरनी आंखमांथी मधर सूर्य पण शुं करी शकशे?

करे ते मनुष्य 'अभिनिवेषिक मिथ्यात्वी' समजवा. 'गोसाळो' अने 'जमाली' आ वर्गनां सुप्रसिद्ध दृष्टांत छे.

वखतना वहेवा साथे, लगभग सर्व धर्मोनां शास्त्रोमां घालमेल थइ छे. अने जैन सूत्र पण कुदरतना कानुन व्हार नथी तेमां पण एमज बन्युं छे अने तेथी शुद्ध (Unmixed)सत्योजाणवा-मेळववानुं काम, जे वखतमां सूत्रो अक्षर रुपमां नहोतां मुकायां ते वखत करतां पण वधारे मुश्केल थइ पडयुं छे.

अभिनिवेषिक मिथ्यात्वी जीवो बनी शके त्यां सुधी तो अमुक शब्द के वाक्यनो अवळो अर्थ ज करीने पोतानो मत चलावे

छे; पण ज्यां एवा बे अर्थ थवा अशक्य
होय छे त्यां शब्द के वाक्य मचारवा के
पदार्थज्ञानो भ्रम छेतो मरा पण अथकारा
नथी केटलाक तो कपोळकल्पित शास्त्र
रची तेमां मेकरो वरस उपरनी तारीख
लखी रचनार तरीके पुराणा मस्म्यात पंडीत
के महात्मानु नाम लखी तेने ममी
नमां दाटे छे अने शिष्योने कहे छे के
सो के पांचसो वरस सुधी आ ग्रंथ बहार
काढशो नहि पाछळथी ए पुस्तक महात्मा
नी मसादी तरीके माभ आस्थाथी ज पू
भाय छे

आ बहुलसमारी जनो खरेखर ममावि
भो जीवनी दयाने पात्र छे तेमणे तेमन

नम्र भावे सुबोध करवो अने जो शिखा-
मण आपनारी सुगरीनो माळो वांदराए
तोडी नाख्यो एम करवा तेओ तत्पर थाय तो
वहेतर छे के चुप रहेवुं अने दुनिया तेम-
नाथी फसाय नहि एटला माटे मात्र-
साचा मार्गना उपदेशने प्रसराववो.

(४) संशयिक मिथ्यात्व.

"वीतरागनो परूपेलो धर्म, परुपनारने
पक्षपातनु कांइ कारण न होवाथी, ठीक
तो जणाय छे; पण सोळ आनी साचो हशे
के केम ! " एम मनमां शशय राखे अने
निश्चयपर न आवे, निश्चय करवा माटे उद्यम-
शीलज नथाय: एवाने ' शंशयिक मि-
थ्यात्वी ' कहेवाय छे

सूमनी घणीएक बाबतो उपर विचार करीने सत्यवानी खात्री करी होय एवा जनोए कोइ कोइ बाब समजवामां न आवे तो सशयमां पडी सम्यक्त्वने मलीन न करवु, पण विचारशक्ति फोरववी वि चारणाक्रिया अलौकिक—अनुपम तथा र हेली छे दुनियानी मोटी मोटी शोधो वि चारशक्ति फोरववाना प्रतापे ज थइ छ माटे दृढतापूर्वक विचार कर्या करवो—तेमां केटला दवरंतु शोपण मो पूर्वकमना योगे पोतानी शक्ति लगभग नकामीज थइ पडे तो काइ पंडीतजन पासेथी संशयनो ख़ु लासा मेळववो तेम छतां खुलासो न थाय तो पछी ' तुयेव सच ज जोणइ पवेइय "

अर्थात् 'तमे जं साचा छो—तमे कह्युं ते सत्य छे', ए श्री 'आचारांगजी'नुं वाक्य बोली ते नहि समजायली बाबतने एम ने एम अभराइ (छाजली) उपर मुकी देवी. "ते समजवा जेटलो क्षयोपसम नथी; ते ज्ञान मने मळवानो हजी वखत पाक्यो नथी" एम विचारवुं अने ज्यारे एकाएक तरंगथी या मुनीना बोधथी या कोइ बीजी रीते ते बातनो खुलासो मळवानो जोग होय त्यारे अभराइ उपरथी तेने नीचे उतारवी.

अरुणास्त्र अने एवां बीजां चमत्कारी बाणो के जे एक, फेंकवाथी सेंकडो थइ जतां, वगर बळदे चालतां विमान, अभि-

मम्मुनु कोठायुद्ध विगेरेने आपणे आज-सुधी हसी काढता हता पण नभरी तोपो, रेल्वे गाडी अने बलुन, मस्करनी म्यूह रचना आदि आपणे प्रत्यक्ष जोइये छीये सारे आपणी प्रथमनी मूर्खामी उपर हसवुं आव्या वगर रहेतुं नथी नगरनी खाळ अने गीचीगलीचीनां जंतुओ (Germs) दरदो उत्पन्न करे छे, ए सिद्धांत जैन सूत्रमां छे, पण आमना डाकटरोए साबीत कर्यो ते पहेलां तेने कोइ मान्ये न मानतु पृथ्वी दडा जेवी नथी अने सूर्यनी आसपास फरती पण नथी, ए सिद्धांत यूरोपियन खो-धकोना मतथी विरुद्ध अने जैन मतने अनुसार छतां खुद जैनोनो ज मोटो भाग

शंकाशील हतो अने छे. पण छेक आधु-
निक शोधकोए अवलोकन अने प्रयोगोथी
ए वातने सिद्ध करी छे अने ए सिद्धांतनी
तरफेणमां अंग्रेजी पुस्तको पण छपायां छे.
'पृथ्वीनो-प्राणीनो ने वनावोनो कर्त्ता इश्वर
होवो जोइए' एवी मान्यता घणाखरा
धर्मोनी होवाथी अने ते धर्मावलंबीओनो
सहवास जैनीओने घणो होवाथी खुद
जैनो पण 'इश्वर करे ते खरुं,' 'राम राखे
तेम रहेवुं' विगेरे उद्‌गारो हालतां चाल-
तां काढे छे; पण 'बाइबल' पक्कुं शीख्या
पछी विद्या (Science) ना अभ्यासमां
जोडायला यरपियन विद्वानोए ज* 'वा-

* प्रोफेसर ज्होन वुइल्यम् ड्रेपर M D., L. L. D

इवल'ने शुद्ध पाकी दासला वलीलो सबित साबीत कर्युं छे के, पृथ्वीनी आदि होइ शके ज नहि अने तेनो कर्ता समवे ज नहि जेम जेम विद्या (Science) नो अभ्यास वीलवो जशे तेम तेम जैन सिद्धांतो वधा-रे प्रकाशमां आवता जशे आथी एम सि-द्ध थाय छे के, जैन धर्मने जैनो अने दु नियां समजी शके एटला माटे प्रथम जैन सूत्रोनो अभ्यास करीने पछी विद्या (Science)नी जुदी जुदी शाखाओना अभ्या स पाछळ केटलाक जुवानीआओए मच्युं प डवुं ए आवश्यकीय छे श्रीमंत आगेवा-नोए आवी गोठवण करवा वखत खोवो जोइतो नथी

(५) अनाभोग मिथ्यात्व.

जेने धर्म-अधर्मनुं के जीव-अजीवनु कांइ ज्ञ भान नथी,एवा बालवत् जीवो 'अनाभोगी मिथ्यात्वी' छे ए वर्गमां एकेंद्रिय, बे इंद्रिय, ते इंद्रिय, चौरेंद्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय * अने ते उपरांत अज्ञान मनुष्यो: एटलानो समावेश थाय छे

(६) लौकिक देव-धर्म-गुरू गत मिथ्यात्व.

(अ) लोकमां जेने देव मनाय छे पण जेनामां 'देव'ना गुण नथी एवाने मानवा पूजवा ए 'लौकिक देवगत मिथ्यात्व' क-

* जेवा के पोपट, काकाकौआ विगेरे.

देवाय पोताने समकिती जीव कहेवरावे अने लग्न प्रसंगे गणपतिनु पूजन तो चुके नहि. शनिवारे हनुमानने तेल चडावे, अंबा–भवानी–पीर–पेगंबरनी मानता राखे, एवुं 'लौकिक मिथ्यात्व' खरेखर जैनोने नीचुं जोवरावनारु छे जूदा जूदा देशोमां गणपति, हनुमान, महुवा, भेरुजी, गुरफ देव गोगो, आसपाल, रामदेव(कानुबा), बहुचर, भवानी, तुलजा, अंबा, हिंगलाज, पीर–पगंबरनी कबरो, मेघपाळी आदि कुदेवः विगेरेने धर्मदेव तरीके मनाय छे; परन्तु, श्री वीतरागनो 'आत्मधर्मय'नो सिद्धांत ज आ सर्व देव–देवीओथी दूर रहेवा फरमावे छे

(ब) एवीज रीते लौकिक पर्वने लाभ थवानी लालचथी मानवा-पाळवा ए 'लौकिक धर्म गत मिथ्यात्व' छे. लाखा पडवो, भाइ बीज, अक्षय तृतीया, गणेशचोथ, नागपंचमी, उभछठ, शीळीसातम, जन्माष्ठमी (गोकळ आठम), अक्षयनवमी (रामनवमी), दशेरा, भीम एकादशी, वत्स बारस, धनतेरस, रूप चतुर्दशी (काळी चौदश), दीवाळी, होळी, नोरतां ः विगेरे तिथिओमां पूजा-निवेद- ब्रह्मभोजन आदि कार्यो करवां ते 'लौकिक धर्मगत मिथ्यात्वी' नां कार्यो छे.

दशेरा मात्र आनंदनो मेळावडो छे— अश्वोनी परीक्षानो अने तेमने हरीफाइमां

उठारी तेम रासवा माटे निर्मेलो दिव
स छे; धनतेरस घरेणांगांठां साफसुफ
करवानो अने धन संभाळवानो दिवस छे,
होळीनो भडको माघ इत्यादिना नुकसान
कारक मनुष्योनो उपद्रव अटकाववा माटे
छे, दीवाळी ए वार्षिक हिसाब करवानो
वखत छे: आम घणाखरा तेहवारो मूळ
थी संसारव्यवहार अर्थे निर्मायला; पण
तेमां धंधा वगरना युक्तिबाज उपदेशकोए
धर्मनु नाम घुसाडी दीधु अने घर मथमां
तेथी धनपुत्रादि मळशे एवुं लोकोने ठसाव्यु
जैना घेर पोताओ हाथ तेओ दशेरा
ना दिवसे घोडदोड करे एथी कांइ 'लौ-
किकधर्मगत मिथ्यात्वी' कहेवाय नहि, प-

ण वीजाओ ते दिवस जे 'समीपूजन' करे छे ते विगेरे कामो करे तो अलबत मिथ्यात्व खरूं ज. आ न्याय घणी वावतो उपर लगाडी शकाय मतलब के, संसार व्यवहारना उपयोग अर्थे जे करवुं (पण तेमां धर्मबुद्धि के परभवमां तेथी लाभनी आशा वीलकुल न मानवी) तेमां मिथ्यात्व नथी परन्तु जोशीना कहेवाथी वांका ग्रहने सीधा करवा माटे जाप जपाववा, 'गोरणीओ' जमाडवी, मरनारना नामथी 'ब्रह्मभोजन' आपवुं : ए सर्व चोख्खुं मिथ्यात्व ज छे आहा ! जैन धर्म आ स्पर्धामय जमानामां—रळवानां साधन कठण थतां जाय छे एवा जमानामां—केवो उपकारी

थइ पडे तेवो छे ! छतां जाणी जोइने जे
तेओ आ भवमां नुकशान अने परभवमां कु
गति वहोरी ले छे तेओ खरेखर ' दुश्मना
दोस्त ' न होवा जोइए !

(क) बावा-बैरागी-भाट-ब्राह्मण-लौ
किक गुरु,फकीर विगेरेने मानवा-पूजवा
ते ''लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व'' कहेवाय

लौकिक गुरु एटले के धर्म सिवायनी
बीजी बाबतो शिखवनार गुरु ते आपणो
उपकारी तो खरो तेनो बदलो आपवो ए
आपणुं कर्त्तव्य छे पण तने धर्मबुद्धिथी
गुरु न मानवो जेमके मातापितानो विनय
करवो, तेमनी सेवाभक्ति करवी ए विगेरे
तेमना उपकारना बदलामां करवुं ए शुभ

नी फरज छे अने श्री जीनदेवे तो गर्भमां पण माताने रखेने दुःख थाय एम समजी शरीर पण फेरव्युं नहोतुं अने पाछळथी पण मातानो अत्यंत प्रेम जोइ पोताना वियोगथी तेमने महादुःख थशे एम मानी तेओना मृत्यु सूधी संयम लेवानुं मुलतवी राख्युं हतुं ए वधुं छतां—जैन मार्ग एटलो विनय बोधे छे छतां—'मातापितानी भक्तिथी मने मोक्ष मळशे' ए मान्यता जैन मतने मान्य नथी.

(७) लोकोत्तर देव-धर्म-गुरुगत मिथ्यात्व.

(अ) लोकोत्तर एटले लोकमां मनाता

(लौकिक)थी जूदी तरेहना; लोकोत्तर देव एटले लोकमां मनाता, गुण विनाना देवथी जूदी तरेहना एवा श्री वीतराग देव एवा वीतराग देवने बदले तेमनी मूर्तिने माने-पूजे ए 'लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व'

तेमज 'मारु अमुक काम थशे तो हुं देवनी मोटी पूजा करावीश, छत्र चढावीश' विगेरे मानता* राखे ते 'लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व' छे. ते महान् देवने देवताइ ए ननी तमा नथी तो आपणा ढींगला छत्र नी शी गरज होय ? अने ते परमदयालु-समदृष्टि प्रभुने मन तो मानता राखनार मनुष्य अने मानता राखनार वगरना छे ते

* मारवाडमां जेने 'बोलवा' कहे छे

फुलः ए बन्ने पर एक सरखो दृष्टि छे.ग-
रीब विचारा ! निराभिग्रही,मालमिल्कत तो
शुं पण एक अणु जेटली पण चीज नहि
राखनारा देव पासेथी धन-पुत्र इच्छनारा
केवा भूला भमे छे !

(ब) एवी ज रीते लोकोत्तर धर्म एटले
निरारंभी जैन धर्म तेने संसार बुद्धिए—
स्वार्थ अर्थे उपयोगमां ले, जेमके श्री ती-
र्थंकर देवनी जन्मादिक पांच कल्याणीक
तिथिओ तथा अष्टमी-चतुर्दशी-पौर्णिमा-
चंदनबाळाना तेलाः इत्यादितपस्या,कष्ट नि-
वारण अर्थे करे, अने लोभ-इच्छा सहित
आयंबीलनी ओळी करेः ए विगेरे करनार
'लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्वी' कहेवाय

'लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्व' नु ए
क नमुनु काम हमणां हमणां जैनोमां दाख
ल थवा लाग्युं छे ए 'धोळुं पाप' घणा
ने भूलावो खवरावे छे जेनो दाग रंग न
काळो होय ते तो तरत पकडी शकाय,प
ण आ 'धोळा पापे' स्वधर्माभिमानना
नामे लोकोने खोटा रस्ते चडाववा मां
ड्या छे हमणां थोडा वर्षो 'जैन लग्नविधि'
शरु थई छे तेमां शुं क्रिया थाय छे ? हिं
साना विचारथी पण दूर नासनार तीर्थ
कर देवना नामथी जळनी आहुति अपाय
छे । गण्या गणाय नहि एटला अपिका
यना अने अपकायना जीवोनो संहार ए
शामय शांतिनापना नाम उपर थाय छे।

रकन्या वे जीवने भविष्यमां सुख आ-
वा माटे निर्लोभी देव आगळ संख्या व-
गरना जीवोनो भोग अपाय छे! तेमने सं-
तान अने सांसारिक सिद्धि आपवा माटे
निरारंभी प्रभुने प्रार्थवामां आवे छे! के-
वी जवरी मोहदशा! केवो जबरो परस्पर-
विरोध! तीर्थंकर देव अने तेमना धर्मनुं
आ केवुं जवरुं अपमान! केवुं कदरुपुं ध-
तींग! धर्माचार्यो कदी लग्ननी विधि योजी
शके ज नहि.

गणेश–गणपति आदि देवोनी पूजा
आपणे छोडवी जोइए, ए रुडा हेतुथी ज
कदाच आ धतींग दाखल थयुं होय एम
आपणे स्विकारीए; तोपण 'वकरुं काढतां

नेट पेसे ' एवुं करवुं ते शुं सुसनुं काम छे! ए करतां तो वरकन्यानो हस्तमीळाप क राबी, जनसमुह समस्त वर अने कन्या ए क बीना तरफ निमकहलाल रहेवानां व चन ले (' सप्तपदी ' मां छे तेवां) अने पछी कुटुंबीओने के स्नेहीओने प्रीति भो-जन आपवुं; एवो कांइ * रीवाज कर्यो होय तो तेओ खरा 'सुधारक' कहेवात ? एवी सांसारिक माय उपरांत मिथ्यात्वथी व चवानो लाभ पण थाय

* परिस्र पोमना योगी आपनी एकांइ मारुं अत्र प्रयोजन नथी घणा सुधारकोए ए क्ना मढी एक विचार उपर आवुं मरवुं छे —प्रारांभक

(क) 'लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' संबंधी पण ए ज प्रमाणे समजी लेवुं. जैनमुनी सरखो वेश राखे पण ('पंच समिति'- 'त्रण गुप्ति'-'ज्ञान' आदि) गुण रहित होय अने जीनाज्ञाथी विरुद्ध परुपणा करता होय, छकायनो कुटो करे—करावे, पोता अर्थे चीज बनावरावे अने खरीदावे गृहस्थ (घरबारी) साथे आलापसलाप करे, ' आ काळमां शुद्ध मार्ग कहीए तो तीर्थनो उच्छेद थाय, माटे चालतुं होय तेम चालवा दो' एवो उपदेश करे : आवी जातना साधुने गुरू करी माने ते 'लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्वी ' कहेवाय

दृष्टांतः—श्री " उत्तराध्ययन सूत्र

अध्ययन २१ मां केशी स्वामी—गौतम स्वामीना संवादना अधिकारमां कह्युं छे के, " पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ-ने 'मानोपेत'* तथा एक ज वर्णनां अर्थात् सफेद वस्त्र कल्पे " तेमज वळी "आचारां-गजी" मां चौदमा अध्ययनना बीजा उद्देशे स्पष्ट कह्युं छे के:—

'णो धोएज्जा, णो रएज्जा,
णो धोयरत्ताई वत्थाइं धारेज्जा'

अर्थात्, साधुए 'वस्त्र धोवां नहि, रंगवां नहि रंगधोयेलां वस्त्र पहेरवां नहि' : छतां जैनो ध्यास रंगेलां ज वस्त्र पहेरे छे अने तेम छतां वळी पोताने जैनमुनी तरीके कहावे छे, ए-टलेथी ज नहि संतोष पामवां सफेद पर

* अमुक लंबाइ पहोळाइनुं मान (माप) बताव्युं छे ते प्रमाणे

धरनार साधुने कुसाधु कहे छे, तेमनी निंदा करे छे, हरेक रीते तेमने रंजाडवामां आनंद माने छे: एवाने गुरु करी मानवा ते 'लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' छे. वीतराग—राग-रंग वगरना तेना अनुयायी साधुने वळी राग-रंग श्या ?

वळी केटलाक जैन साधुना नामनी 'मानता' राखवामां आवे छे, पाटे रुपिया मूकाय छे; ए एक जवरुं 'लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' छे. आवी मानता स्विकारनारा अने मानतानो उपदेश करनारा जैन साधुओ मात्र वेशधारी छे तेओ ते रुपिया ज्ञान खाते वापरे छे अगर वपरावे छे एवुं वहानुं बनावे छे;पण ज्यां ए रस्तो ज तदन खोटो त्यां पछी तेना उपयोगनी

पाप न क्यां रही ? गणिकानो धंधो करी रळेलो पैसो धर्मभोजनमां खरची ए रीते पाप धोवानी आशा राखनारी मूर्ख स्त्री जेवुं ए बरानुं छे

(८)कुप्रावचनिक देव धर्म-गुरुगत मिथ्यात्व

लौकिक देव अने कुप्रावचनीक देवमां तफावत ए छे के लौकिक देवने सांसारिक सुखनी आशाए मनाय छे—पूजाय छे, अने कुप्रावचनीक देवने मोक्षनी आशा ए मनाय छे—पूजाय छे

हरि, हर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम

चंद्र, वालाजी, विगेरे देवो के जेना गुण-
कथनमां स्त्री-मोह-क्रोध-विगेरे अवल दर-
ज्जो भोगवे छे तेओने जे लोको माने छे तेमना-
मां 'कुप्रावचनिक देवगत मिथ्यात्व' समजवुं.
अलवत ते माननाराओ तो कांइ आ लो-
कना सुख अर्थे तेमने मानता नथी पण
मोक्ष अर्थे माने छे; परंतु तेओनी पसंदगी
खोटी छे ते देवो पोते ज मोक्ष पाम्या न-
थी तो मोक्ष बीजाने पमाडवा केवी रीते
समर्थ होय ?

तेमज होम, जाप, यज्ञ, सूर्यने बली-
दान, पूजा, दीशा पोंखवी विगेरे जे क्रि-
याओ धर्म बुद्धिए करे छे ते पण "कुप्रा-
वचनिक धर्मगत मिथ्यात्व' समजवुं

अने एवी ज रीते सन्यासी, जोगी, ड
ध, परमहंस, रामस्नेही, स्वामी नारायण
ना साधु, दादुपंथी, पादरी, फगर, फकी
र, रामानुजपंथी, मानुभव ? आदिने धर्म
गुरु करी मानवा छे ' कुप्रावचनिक गुरु
गत ' मिथ्यात्व समजवुं

एम 'लौकिक मिथ्यात्व' आलोकना सु
ख अर्थे भूला भमवानुं काम छे—अने 'कु-
प्रावचनिक मिथ्यात्व' ए मोक्ष माटे भूला
भमवानुं काम छ

(९) वीतरागे जे कर्युं ते करवा जोगु
पाप्ये ते मिथ्यात्व नवमुं जेमके, श्री वीतरागे
एक जीवना असंख्यात प्रदेश बताव्या 'उ
ववाइसूत्र'मां मान नि रूपनो अधिकार छा

ल्यो छे, जेमांना तीसगुप्त आचार्यना मतानुयायीओए एक ज चर्मप्रदेशने जीव मान्यो-परूप्यो;ते'ओछी परूपणा' कहेवाय.

(१०) वीतरागे कह्युं ते करतां अधिक परूपे ते दशमुं 'अधिक परूपणा मिथ्यात्व'. भगवंते श्री 'ठाणांगसूत्र' मां जीव अजीव एम बे रासी परूपी छे छतां श्री'उववाइ-सूत्र'मांना ७ निन्हवमांना रोहगुप्ते 'नो-जीव-नोअजीव' ए नामनी त्रीजी रासी परूपी ते'अधिक परूपणा' कहेवाय.

(११) वीतरागे कह्युं तेथीविपरीत (विरुद्ध) परूपवुं ते अगीआरमुं'विपरीत परूपणा मिथ्यात्व' दृष्टांतः—आषाढाचार्य देवलोक जता छतां शिष्यो उपरना मोहने

लीधे पोताना मृत शरीरमां प्रवेश करीने शिष्योने अभ्यास कराववो जारी राख्यो काम संपूर्ण थया पछी तेओ शिष्योने मार्ग-भीस आपी पोताना ठेकाणे गया त्यारथी ते शिष्यो व्हेम मां पड़ गया क सर्व मुनीओना शरीरमां देव आवीने रहेवा हशे माटे ते-ओए कोइ पण मुनीने वांदवा—नमवा—वि-नय करवानुं मांडी वाल्युं अने बीजाओने पण एवी ज परुपणा करी

(१२) जीवने अजीव सर्दहे ते मिथ्यात्व
(१३) अजीवने जीव सर्दहे ते मिथ्यात्व
(१४)दयाधर्मने अधर्म सर्दहे ते मिथ्यात्व
(१५) हिंसाधर्मने धर्म सर्दहे ते मिथ्यात्व
(१६) २७गुण सहित पंचमा साधुने अ

ज्ञानथी अथवा मताग्रहीपणाथीअसाधु कहे ते मिथ्यात्व.

(१७)२७ गुणरहित साधु होय तेने साधु कहे ते मिथ्यात्व

(१८) कर्म खपाववानो जे मार्ग, (ज्ञान दर्शन–चारित्र–तप रुपी) तेने उन्मार्ग अथवा कुष्ट कहे ते मिथ्यात्व.

(१९) उन्मार्गने मार्ग कहे ते मिथ्यात्व

(२०) अष्टकर्मथी मुकाणा एवा श्री ऋषभदेव,श्री रामचंद्रजी आदि पाछा संसारमां अवतार ले छे,एवु सर्दहे ते मिथ्यात्व.

(२१)कर्मथी नथी मुकाणा एवाब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि:तेने मुक्ति गया सर्दहे ते मिथ्यात्व

(२२) 'अविनय मिथ्यात्व' साधु, साध्वी, श्रावक श्राविकानो अविनय करे-छद्मस्थपणुं करे–निंदा करे–छीद्र जोयां करे ते ('कुलवालुमा' साधुनी पेठे)

(२३) 'आसातना मिथ्यात्व' अरिहंत सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–साधु–साध्वी-श्रावक–श्राविका–समकिती देव देवी–धर्मनी पांचणी देनार इत्यादि धर्मीजीवनी २१ पैकी काइ पण प्रकारथी आसातना करे ते

(२४) 'अक्रिया मिथ्यात्व' शुष्क वेदान्तीनी माफक कहे के,"आत्मा सो परमात्मा' माटे क्रिया करवानी जरुर नथी", एवुं कहे ते

(२५).' अज्ञान मिथ्यात्व.' उंधुं जाणे-देखे-परुपे अने कहे के, " ज्ञान भणे शुं थाय? जे जाणे ते ताणे; अजाणने पाप न लागे * " [पण समजे नहि के अजाणे झेर खाय ते पण मरे छे जाणीने झेर खानारो पण मरे छे खरो तथापि जो ते वखतसर पस्ताय अने दवा करे तो बचवा संभव छे.]

---

* कायदो पण अज्ञानतानु बहानुं स्विकारतो नथी

मोती नहि तो मोतीनी नकल तुल्य रा पकडे छे

एवीम रीते चौद प्रकारना श्रोताओ ना मनमां एक ज वात जूदा जूदा अर्थमां समजे छे एमां काइ आश्चर्य थवा जेवुं न थी; तेमज तेथी मूळ वात कांइ जूठी थती नथी

(१) शिल-घन घटः—पथ्थर उपर,आ रेमां मारे गणातो 'पुष्कर संवर्तक' मेघ मु सळ धारा सात अहोरात्रि पडे तो पण पथ्थर पलळे नहि ए रीते केटलाक श्रो ताओने उत्तमोत्तम गुरु मळ्या छतां तेओ बोधिबीज पामता नथी (ज्यारे कालो भूमि समान केटलाक थोडो थोडो वरसा- द अथवा उपदेशने पण ग्रहण करी

(२) कुंभ वत् :—कोइ कुंभ अथवा घडो तळेथी काणो, कोइ पडखेथी काणो, कोइ कांठा रहित अने कोइ संपूर्ण होय छे. तळेथी काणो घडो ज्यां सूधी आडो हाथ राखीए अगर जमीन साथे बराबर चोटेलो राखीए त्यां सूधी तेमां पाणी रही शके छे, अने आधार दूर थतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रोतामां, उपदेशक पासे होय त्यां सूधी असर रहे छे पण उपदेशक जूदा पडया के तेनी साथे ज घोवाइ जाय छे. पडखे काणा घडामां थोडुंक पाणी रहे छे अने कांठा रहीत घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे. परन्तु पुरेपुरुं जळ तो अखंड घडामांज रही

प्रकरण ८ मुं

श्रोताना प्रकार

'वीतराग बोध' अथवा निष्पक्ष पात सत्योनुं कथन उपदेशको मारफत अने छापा तथा छापखानां मारफत संख्याबंध मनुष्यो पासे रजु थवा छतां दुनियानो आटलो मोटो भाग हजी अज्ञान केम छे अने ए 'वीतराग बोध'ना ज संबंधमां खेंचाखेंची केम चाली रही छे, ए एक स्वाभाविक प्रश्न छे तेमज ए प्रश्न कोइ सर्वज्ञानी देवनी दृष्टि बहार नहोतो प्रश्न उत्पन्न थया पहेलां ज तेओश्रीए श्री

'नंदीसूत्र'मां तेनो खुलासो करी राख्यो छे.

ए सूत्रमां एक गाथा छे, जेमां चौद प्रकारना श्रोता गणाव्या छे आ गाथा एम सूचवे छे के, विविध स्वभावना प्राणीओ पोतानां कृतकर्म अनुसार मळेली बुद्धिना प्रतापे एक ज वस्तुने जूदा जूदा रुपमां जुए छे अने समजे छे. स्वाती नक्षत्रमां पडेलुं वरसादनुं बिंदु अमुक छीपमां पडवाथी महामूली मोतीनुं रुप धारण करे छे, ज्यारे ते ज वरसादनां बीजां टीपा समुद्रमां पडी खारु पाणी बनी जाय छे; वळी ते ज वरसाद कादवमां पडी कादवमय पण बनी जाय छे; तेमज वळी ते ज वरसादनां टीपां वनस्पति उपर पडी

मोती नहि तो मोतीनी नकल तुल्य रूप पकडे छे

एवीज रीते चौद प्रकारना श्रोताओ ना मनमां एक ज भाव जुदा जुदा अर्थमां प्रगमे छे एमां कांइ आश्चर्य थवा जेवुं न थी, तेमज तेथी मूळ भाव कांइ जूठो थती नथी

(१) शिल-घनवत्:—पथ्थर उपर, मा-रेमां मारे गणातो 'पुष्कर संवर्तक' मेघ मु सळ धारा सात अहोरात्रि पडे तो पण पथ्थर पलळे नहि ए दृष्टांते केटलाक श्रो ताओने उत्तमोत्तम गुरु मळ्या छतां तेओ वीन्यकुल भूझता नथी (ज्यारे काळी भूमि समान केटलाक जीवो थोडा वरसा-द अथवा उपदेशने पण झट ग्रहण करी ले छे)

(२) कुंभ वत् :—कोइ कुंभ अथवा घडो तळेथी काणो, कोइ पडखेथी काणो, कोइ कांठा रहित अने कोइ संपूर्ण होय छे तळेथी काणो घडो ज्यां सूधी आडो हाथ राखीए अगर जमीन साथे बराबर चोटेलो राखीए त्यां सूधी तेमां पाणी रही शके छे, अने आधार दूर थतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रोतामां, उपदेशक पासे होय सां सूधी असर रहे छे पण उपदेशक जूदा पडया के तेनी साथे ज धोवाइ जाय छे.पडखे काणा घडामां थोडुंक पाणी रहे छे अने कांठा रहीत घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे परन्तु पुरेपुरुं जळ तो अखंड घडामांज रही

शके छे तेमज वळी ते जळ श्याम पण करतुं नथी, छलकातुं पण नथी एवीज रीते केटलाक श्रोता पूर्ण उपदेश ग्रहण करे छे; संपूर्ण घडानी अंदरना सर्व पुद्गलो जेम जळथी शितळ थने छे तेम तेवा श्रोताना अंतरमां रगेरगे उपदेश लागी जाय छे अने तेओ छलकाइ जता नथी; घांघळ करता नथी; परन्तु बीजानी तृषा मटाडे छे, निर्मळ करे छे अने शान्ति आपे छे

वळी पण घडाना घणा प्रकार छे को-इ घडो अंदरथी सुवासीत (सुगंधीदार) द्रव्यथी लींपेलो अथवा बनेलो होय तो तेनी अंदरनु जळ पण सुगंधीदार बनशे; अने जो अंदरथी दुर्गंधी पदार्थथी लींपेलो के बनेलो होय तो जळ पण तद्दन बगानु

वळी, काचो कुंभ हशे तो सहज फांसी प-
डशे अर्थात् फुटी जशे अने परिपक्व हशे तो
सारो चालशे. ए ज प्रमाणे श्रोताना स्वभाव
संबंधमा समजवु

(३) चारणी वत्:—चारणीमां पाणी
नाखीए तो तेमाना सख्याबंध छीद्रो वाटे
ते नीकळी जाय छे तेमज मोह, मत्सर, प्र-
माद आदि छाद्रो वाळा श्रोताओना हृदयमा
रेडातो सर्व उपदेश ए छीद्रो वाटे तत्क्षण
वही जाय छे

(४) सुग्रहीना माळा वत्:–विची-
क्षण प्रकारना घर अथवा माळा बाधवा माटे
प्रख्यात थयेली सुग्रही अथवा सुघरीना मा-
ळामां घीविगेरे गाळो शकायछे; अर्थात् चोख्खु
घी तेमाथी वही जाय छे अने तृण, काष्ट

कचरो आदि पाताने तेपन्डा राखे छे ते रीत रीते एवा पण श्रोताओ छे के जेओ उपदेशनो उत्तम भाग पडो जवा दे छे अने तेनो कचरो ज ग्रहण करे छे

(५) हंस वत् —हंसपक्षीना माळाथी उलटा प्रकारनु काम हंस करेछे मिश्र करेला दूध—पाणामांथी दुध ज ते सुंदु पाटा पीएछे तमज उत्तम श्रोताओ उपदेशकना वाक्योमा रहेलुं तत्व सेंचवा साथे ज पातानुं कर्तव्य छे एम मान छ

(६) महिषी वत्ः—महिषो एटले भेंस ज्यारे पाणा पावा तळावमां जाय छे त्यारे पहेलां तो मस्तक सींगडा अने पग वडे पाणी डोळी नाखे छ, पछी मळमूत्र करछे त्यार पछी ते ज जळ पीए छे पोते निर्मळ

पाणी पी शके नहि अने बीजाने पीवाना पाणीने पण निर्मळ रहेवा दे नहि एवीज रीते केटलाक जीवो खरा उपदेशने डोळी नाखे छे अने ते डोळेलु पोते ग्रहण करे छे अने बीजाने पण तेमज करवा कहे छे. घणीए मस्तानी भेंसोए सूत्रोना शुद्ध जळने ग्रथो रुपी सींगडांथी डोळी कादवमीश्र कर्युछे.

(७) बकरी वतः—भेंसथी उलटा स्वभावनो बकरी कीनारे उभी उभी निर्मळ जळ पीए छे तेमज ते बीजाने पीवाना पाणीने डोळी पण नाखती नथी मस्तानी भेंसो तोफानने लीधे घणा जनोनु लक्ष खेंचे अने आ निरपराधी, गरीबडी, सीधे रस्ते जनारी बकरीओ काइ धामधूम न करती होवाथी जनसमाजनी दृष्टि खेंची शके नहि

एमां काइ मापप जेवु नथी सज्जना वा
शुद्ध जळने पोताना रूप करनारी मकरी
मानी प्रमसा एटली बधी करे छ के 'मकस
बरी के मेंम' एवी एक कहाणी थइ पडी छ

(८) मशक मत् –मसग अथवा मसो
–शुमा जना शरीर उपर बेसे छे तेनुं रुधीर
पीए छे, तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक
नज रखवा पारे छे अने नुकशान पहोंचाडे छे

अथवा मशक एटले पाणी भरवानी
चामडानी मसग तेमां पवन अगर पाणी
भरवाथी उमराम थाय छ पण उपी पवना
थी तना पडखां बसी जाय छे तेमज केट
लाक श्रोताओ ज्ञानथी फुली जाय छ; पण
जरा मणुं आवाथी खाली खम थइ जाय छे

(९) जळो वत् :—जळो जेना श-रीर उपर चोटे छे तेनुं मुडदाल लोही पी जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय छे तेमज, केटलाक श्रोताओ प्रथम तो उप-देशकने शंकाओ पूछीने घणी तकलीफ आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-योग करी तकलीफने सफळ करे छे.

(१०) बिडाल वत्:—बीलाडीनो स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय तो ते भाजनने भोंय उपर नाखी दूध ढोळी-ने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरुं दूध पी शकती नथी पण अंश ज मात्र तेना भागमां आवे छे तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक पासेथी सीधी रीते पूरुं ज्ञान मेळवे नहि, का-रण के पूछवा जवाथी पोतानुं मान ओछुं

एमां काइ आश्चर्य जेवुं नथी. सज्जनना ता
शुद्ध जळने पीवानो लाभ करनारी चकरी
मानी अपेक्षा एटली बधी करे छे के 'मक्कस
घरी के भेंस' एवी एक कहेवाणी पड़ पडी छे.

(८) मशक मत् —मसग अथवा मसो
-जुवा जना शरीर उपर बेसे छे तेनु रुधीर
पीए छे, तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक
नम इलका पाडेछे अने नुकशान पहोंचाडेछे

अथवा मसक एटले पाणी भरवानी
चामडानी मसग तेमां पवन अगर पाणी
भरवाथी टमटोल थाय छे पण ज्यां पश्चा-
थी तनां पटला बसी जाय छे तेमज कट
मार श्रोताओ ज्ञानथी फुली जाय छे, पण
जरा स्वर्थु सावाथी खाली सम थइ जाय छे.

(९) जळो वत्:—जळो जेना श-
रीर उपर चोटे छे तेनुं मुडदाल लोही पी
जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय
छे तेमज, केटलाक श्रोताओ प्रथम तो उप-
देशकने शंकाओ पूछीने घणी तकलीफ
आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-
योग करी तकलीफने सफळ करे छे

(१०) बिडाल वत्:—बीलाडीनो
स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय
तो ते भाजनने भोंय उपर नाखी दूध ढोळी-
ने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरुं दूध पी
शकती नथी पण अंश ज मात्र तेना भागमां
आवे छे. तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक
पासेथी सीधी रीते पूरुं ज्ञान मेळवे नहि, का-
रण के पूछवा जवाथी पोतानुं मान ओछुं

थाय, पण पोताने अपाता उपदेशमांथी किं
चित् ग्रहण करे मन एवा पुरुषोनी मा ज्ञानथी
ज्ञानी बने

(११) सेलो मत्—सेलो अथवा
नोळीओ प्रथम माताने धावी पछी बगळो
भइ रमी रमीने दूध पचावे अने फरीथी धावे
अने पचावे; ए प्रमाण रुपतु रुपतुं दूध पीए
अने पुष्ट थाय ते एटले मूवी के अबरा सर्वनु
पण भान गाळ तेमज, केटलाक मनुष्यो ए
कि गुरुव पोरे थोड उपदेश श्रवण करी ते
उपर मनन अने निदिध्यासननी कमरत ले
अने पछी आगळ उपदश श्रवण करे एम वि
शेष ने विशेष ज्ञान पाका पाये मेळवता जाय
मन छेवट ज्ञानमा पटका मजबुत थाय के
मिथ्यास्त्री भुजंगोनुं भान मकावे

(१२) गो व्रत्:—एक राजाए कांइ ब्राह्मण कुटुम्बने एक गाय दोइ पीवा आपी. परन्तु ते ब्राह्मण आळसु अने बेदरकार होवाथी ते गायनी सार संभाळ तेणे अगर तेना कुटुंबे राखी नहि. कुटुम्बनो दरेक माणस एम समजतो के, दूध नीकळशे ते आखुं घर पीशे तो मारे तेने चारो नीरवो विगेरे श्रम शा माटे उठाववो जोइए? एम कोइए पोताना माथे जोखम राख्युं नहि. छेवटे ए गाय प्राणरहीत थइ अत्रे राजा ए तीर्थंकर तथा आचार्य; गाय ते साधु तथा शास्त्रो, अने ब्राह्मण कुटुम्ब ते जनमंडळ. भव्य प्राणीओना हितार्थे,ज्ञानरुपी दूध आपनारी गाय अथवा साधुओ अने सूत्रो मळवा छता,तेमनो वयावच्च-विनय भक्ति बराबर न

यथार्थ ज्ञाननी आवक पण कमी थई जायछे

(१३) भेरी सम:—भेरीवाळो मा णस पोताना मालीकना हुकम मुजब ढंढेरा वगाडे छे अर्थात् मालीकनो हुकम भेरी द्वारा जगतने जाहेर करे छे, तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशकनो बोध श्रवण करीने पछी ते ज प्रमाणे बीजाने बोधे छे

(१४) आहीर सम:—भरवाड गा-यनी सेवा भक्ति करे छे-चराबे छे-खवरावे छे अने बदलामां तेने गाय दूध आपे छे, के जे वडे ते हृष्टपुष्ट थाय छ तेवी ज रीते के टलाक श्रोताओ, ज्ञान आपनारा त्यागी तथा संसारी उपदेशको तेमज पुस्तकोनो विनय करे छे एटले के, त्यागी उप देशकने आहारादि आपे तथा विनय भक्ति

करे; संसारी उपदेशकने मानपान तथा जो-इती मदद आपे अने जे पुस्तकथी पोताने ज्ञान मळे ते पुस्तकनो वहोळो प्रसार करे

आ प्रमाणे पोते उपदेशकनो विनय करे अने बदलामा तेमनी पासेथी ज्ञान मेळवी आत्मीक पौष्टि पामे

_ भरवाडनी स्थिति सर्व करतां सुखी गणाय छे कविवर शेक्सपियर ए स्थितिने घणा ज चळकता रंगमां चीतरे छे अने स्वर्गनी प्रतिछाया माने छे

प्रकरण ९ मु

सम्यक्त्वनी स्थिरता

खजानो मळवो मुश्केल छे अने मळ्या पछी साचववो पण मुश्केल छे समकित पामवुं दुर्लभ छे अने पाम्या पछी साचवी राखवु पण दुर्लभ छे

(१) कोई जीव समकित पाम्या पछी कर्म उदयथी क्रोधादि कारणथी पडे, ते पडवानी स्थितिमां वच्चे (छेक जमीन पर पड्यां पहेलां)नी स्थिति: तेने "सास्वादान" कहे छे एवुं समकित एक भवमां उत्कृष्ट

पाच वार फरशी मिथ्यात्वमां पडे ए समकित वाळो जीव अर्ध पुद्गळ परिभ्रमण करे पण अंते तो मोक्ष नगर पहोंचे.

(२) अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया, लोभ तथा समकित मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय अने मिश्र मोहनीयः ए सातने समावया कमर बाधे एने 'उपशम समकित' कहे छे. एवुं समकित पाच वार फरशे; अर्ध पुद्गळ परिभ्रमण करावी अते तो मोक्ष नगर पहोंचाडे

(३) उपरनी ७ प्रकृतिमांनी केटलीक प्रकृतिने बळेला काष्टना कोलसा सरखी करवाथी "क्षयोपसम समकित" पमाय छे. ते समकित एक भवमां उत्कृष्ट असंख्य वार आवे. बीजा अने त्रीजा

समकित भावीने थाय छे अने ए समकि
वाळा जीव भावरे मोक्ष पामे छ

(४) उपरनी ७ प्रकृतिने मूळमां
न वहन करे तेने 'क्षायक समकित'
कहे छे चोथा-पांचमा नवरना समकित
वाळा जीवने एक जनमां एक ज वार
समकित आवे छ अने ते कायम रहे छे अ
माणी उत्कृष्ट त्रीजे भवे मोक्ष जाय छे

(५) 'क्षायक समकित'नी प्राप्ति मा
पुरुषार्थ करे तेना भागला समये जे वेद
ते "वेदक समकित" तेनी स्थिति एक
समयनी छे

समकित रत्नमो माळखणी माटे घाणा
पूरुषे १० प्रकारनी सोवत वर्णवी जोइए:—

(१) 'पासथ्था' एटले आचारमां ढीला एवा पुरुषनी सोवत न करवी

(२) "उसन्ना" एटले मात्र क्रियानो आडंबर राखनारा अने ज्ञान–दर्शनना अजाण : एवा पुरुषनी सोवत न करवी

(३) "कुशील" एटले जेनो आचार शुद्ध नथी तेवा पुरुषनो सोवत न करवी

(४) "संसत्ता" एटले जे साधु, गृहस्थ साथे घणो परिचय राखतो होय तेनी सोवत न करवी

(५) "अपछदा" अथवा स्वच्छंदी लोकोनी सोवत वर्जवी.

(६) 'निन्हव' एटले सात नय पैकी एक ज नयने वळगी रही पक्षग्राही बने (जमाळी माफक) तेवा नरनी सोवत न करवी.

(७) 'कदाग्रही' एटले स्वमति अनुसार सूत्रनो अर्थ करी कोइनु कोईपुं न मानवुं एवुं पूरेपूरुं पकडी राखे अने बीजा रीते पण सघमां क्लेश करावे तेवा नरनी सोबत न करवी

(८) 'नितिया' एटले जे साधु कारण विना नित्य एक स्थाने रहे तेनी सोबत न करवी

(९) 'अन्यमार्गी' जैनथी अन्य मतन माननारा साथे विशेष सहवास न करवो

(१०) 'वमणगा' एटले धर्म पामीन वमी गयेला अर्थात् धर्मभ्रष्ट थयेला एवा अने 'धर्मसंकर' पुरुषोनी सोबत न करवी

चिंतामणि रत्नने साचवनार 'नव वाड' माफक, 'समकित' रत्ननु रक्षण करनार

आ 'दश किल्ला' समजवा. ए किल्ला ज्यां सूधी अणिशुद्ध हशे त्यां सूधी कोइनी मगदूर नथी के समकिती प्राणीना समकित रत्नने लेश मात्र इजा करी शके

मोक्ष नगरीए लइ जती सम्यक्त्वनी सडके जतां नय–निक्षेपनी भूलभूलामणीमां जो कोइ माणस घुंचाइ जाय तो तेणे मात्र 'दया' नामना ध्रूव तारा तरफ दृष्टि टेकववी अने ए दीशा तरफ ज चाल्यां करवुं एथी वेहलो मोडो पण ते इच्छित स्थळे (to the goal) पहोंचशे. पण जो तेटली दृष्टि पण न राखे तो धूताराओ तेने आडा रस्ते दोरी तेनुं सर्वस्व लूटी लइ गतप्राण करी तेने जंगलना गीध अने कागडानो भक्ष बनावशे.

॥ संपूर्ण ॥

त्रण उत्तम सगवडो

(१) गुजराती अंग्रेजी के शास्त्री टाइपमां हरकोइ पुस्तक छपाववुं होय तेओ अमारी मारफत छपावशो तो सस्तुं शुद्ध अने मनहर काम करी आपवामां आवशे. (जैन पुस्तको छापवा माटे गरम पाणी तैयार करावीने वपराय छे)

(२) कोइ पण पुस्तक अगर मासिक जैन कोममां महोळो फेलावो कराववा इच्छा होय तेणे "जैन हितेच्छु" पत्रमां जाहेर खबर छपाववी भाव मंगावी जोवा (पत्रद्वारा पूछो)

(३) जैन तेमज हरकोइ धर्मनां पुस्तको केळवणी खाताने लगतां पुस्तको वार्तानां पुस्तको विगेरे तमाम ग्रंथकारोनां पुस्तको अमारी ऑफिस उपर ऑर्डर मोकलवाथी ताकीदे वी पी थी रवाना करवामां आवशे

पत्रव्यवहार:—मेनेजर "जैनहितेच्छु'

सारंगपुर तळीआनी पोळ—अमदावाद

जैनहितेच्छु ऑफिस तरफथी रचायलां पुस्तको

तैयार छे !

---

(१) सती दमयंती अने तेनी वातमांथी लेवानी शिखामणो:—(आवृत्ति बीजी) आवु उपदेशी अने रसीक पुस्तक बीजुं भाग्ये ज छपायुं हशे खुद सरकारी केळवणी खाताना उपरी अधिकारी साहेबे तेमज गायकवाड सरकारे तेने मंजुर कर्युं छे शब्द ज्ञान, स्मरण शक्ति तेमज विचार शक्ति खीले एवी तेमां गोठवण छे दमयंतीनी सुदर छबी जर्मन कारीगर पासे बनावेली तेमां मुकी छे. किमत ०–६–०; पाकु पुंठुं ०–८–०.

(२) मधुमक्षिका —एमां ससार व्यवहार तथा नीतिना विषयो उपर रमुजी पत्रो (Letters) प्रख्यात अंग्रेजी लेखक एडिसननी पद्धतिथी लखाया छे खुद सरकारी गेझेटे तेने माटे उत्तम मत आप्यो छे ०–४–०

लइ जबानु माथु आदि १२ नीतिना विषयो उपर १२ रसीली वार्त्ताओ छे कुटुंब वच्चे वांचवा लायक आवु पुस्तक बीजु भाग्ये ज मळशे ०८-० सर्व लोकोने घणु पसंद पड्यु छे

(९) "श्रावकनी आलोयणा"—घणीज शुद्ध अने सरळी प्रत किमत मात्र ०-२-०

(१०) 'सम्यक्त्व' अथवा 'धर्मनो दरवाजो' ०-६-० सामटी १० प्रतना रु २॥

☞ आमांना पहेलां नव पुस्तको गुजरातीमां छे, पण कोइ गृहस्थ सामटी सख्याबंध प्रतोनो ओर्डर आपशे तो शास्त्रीमां छापी आपाशु

☞ कोइ पुस्तक उधार मोकलता नथी, ०॥ आनानी टीकीट बीड्या सिवाय कोइ पण बाबतनो जवाब नहि मळे

पत्तो —मेनेजर, "जैनहितेच्छु"—अमदावाद.

*** श्रावक रायचंदजी कृत १८५७० वरसनुं जैन पचांग किमत रु १);

उपरांत 'जैन सझायमाळा', 'जैनतत्त्वशोधक ग्रंथ' विगेरे पुस्तको अमारी पासेथी मळशे.